अभंग - ज्ञानेश्वरी

अध्याय सोळावा

सर्व विश्वाभास। नेतसे अस्तास। अद्‌भुत प्रकाश। ऐसा ज्याचा ॥१॥
तो हा सूर्यदेव। श्रीगुरु निवृत्ति। भावें तयाप्रति। वंदू आतां ॥२॥
अविद्या-रजनी। दूर घालवोनि। [१] अद्वय-पद्‌मिनी। फुलवी जो ॥३॥
करी ज्ञानाज्ञान-। चांदण्या गिळोन। ज्ञानियां सुदिन। स्व-बोधाचा ॥४॥
जयाचा उदय। होतां सुप्रभातीं। आत्मज्ञानदृष्टि। लाभोनियां ॥५॥
जीवरूपी पक्षी। देह-अभिमान-। घरटीं सांडोन। दूर जाती ॥६॥
लिंगदेहरूपी। [२] सरोजीं साचार। जीवात्मा-भ्रमर। कोंडला जो ॥७॥
सुटे तो तत्काळ। सुखें आपोआप। श्रीगुरु-स्वरूप। सूर्योदयीं ॥८॥
भेद-नदीचिया। दोन्ही तीरांवरी। पडोनि [३] जोजारीं। शास्त्रांचिया ॥९॥
बुद्धि आणि बोध। * चक्रवाक-जोडी। वियोगें जी वेडी। हांका देई ॥१०॥
तया चक्रवाक-। जोडप्यालागोन। ऐक्य-समाधान। भोगवी जो ॥११॥
चिद्रूप-गगन-। भुवनींचा दीप। श्रीगुरुस्वरूप-। सूर्योदय ॥१२॥
जयाच्या उदयें। पहाटेच्या वेळीं। फिटोनि आंधळी। चोरवेळ ॥१३॥
[४] आक्रमूं लागती। आत्मज्ञान-पंथ। साधकपांथस्थ। अत्यानंदें ॥१४॥
उद्दीपे ज्ञानाचा। सूर्यकांत मणि। विवेक-किरणीं। जयाचिया ॥१५॥
तया मण्यांतून। ठिणग्या उडोन। टाकिती जाळोन। भवारण्यें ॥१६॥
आत्मरूपाचिया। माळभूमीवर। ज्याचे तीक्ष्ण [५] कर। स्थिरावतां ॥१७॥

---

* परिशिष्ट पहा. १ अद्वैत बोधाचें कमळ. २ कमळांत. ३ जंजाळांत. ४ चालूं. ५ किरण.

अष्टमहासिध्दी। रूपी अनावर। मृगजळपूर। लोटतसे॥१८॥
देखा अंतर्मुख-। वृत्तीचिया माथां। मध्यान्हीं जो येतां। सोऽहंतेच्या॥१९॥
आत्मपदतळीं। राहे लपोनियां। आत्मभ्रांतिछाया। आपोआप॥२०॥
मायारूप रात्र। पावतां विनाश। मग विश्वाभास-। स्वप्नासवें॥२१॥
विपरीतज्ञान-। निद्रेलागीं कोण। ठेवितो जपोन। तिये वेळीं॥२२॥
म्हणोनि अद्वैत-। बोधाचें [१] पट्टण। जातसे भरोन। महानंदें॥२३॥
सुखानुभूतीचीं। जीं का देणींघेणीं। मग तीं हि झणीं। मंदावती॥२४॥
काय सांगूं फार। ऐशापरी साचा। [२] मुक्तकैवल्याचा। शुभ-दिन॥२५॥
लाभतो सत्वर। नित्य निरंतर। प्रकाशें अपार। जयाचिया॥२६॥
परंधामरूपी। गगनाचा नाथ। सर्वदा [३] उदित। स्वरूपें जो॥२७॥
तो श्रीगुरुसूर्य। प्रकटतां जेथ। फेडी उदयास्त। दिशांसवें॥२८॥
नेवोनि अस्तास। ज्ञानाज्ञान दोन्ही। झांकलें तयांनीं। स्व-रूप जें॥२९॥
ज्ञानाज्ञानातीत। करी तें प्रकट। नित्य जें उदित। सर्वांठायीं॥३०॥
बहु बोलूं काय। ऐसा उष:काल। आघवा केवळ। आगळा चि॥३१॥
दिन-रात्र दोन्ही। जाय ओलांडूनि। पहावा तो कोणीं। ज्ञानसूर्य॥३२॥
प्रकाश्यावांचोन। स्वरूपें केवळ। असे जो सुकाळ। प्रकाशाचा॥३३॥
तया चित्सूर्यातें। वर्णाया यथार्थ। वाणी असमर्थ। म्हणोनियां॥३४॥
निवृत्ति-चित्सूर्या। तया नमस्कार। असो वारंवार। म्हणूं ऐसें॥३५॥
एक होय [४] स्तव्य। स्तवन स्तविता। तरी च तत्त्वतां। स्तुति साजे॥३६॥
श्रीगुरु-माहात्म्य। ऐसें अत्यद्भुत। त्रिपुटीचा अंत। होय जेथें॥३७॥
नेणोनियां सर्व। जाणिला जो जाय। मौनानें चि होय। स्तुति ज्याची॥३८॥
जीव शिव ब्रह्म। न होवोनि कांहीं। पहावा जो ठायीं॥ आपुलिया॥३९॥
ऐशा तुझें देवा। करावें स्तवन। हेतु हा धरोन। बोलूं जातां॥४०॥
मध्यमा पश्यंती। घालोनियां पोटीं। विरे वैखरी ती। [५] परेसंगें॥४१॥
ऐशा तुज देवा। बोलक्या स्तुतीचें। लेवविलें साचें। लेणें येथ॥४२॥

---

१ नगर. २ केवलस्वरूपभावाचा. ३ उगवलेला. ४ ज्याची स्तुति करावयाची तो. ५ परावाणीसह.

सहावें तें आतां। ऐसें सेवकत्वें। जरी विनवावें। पूर्णानंदा ॥४३॥
तरी तें हि तुज। उणें आणणें च। ऐसें वाटे साच। मजलागीं ॥४४॥
देखोनि अपार। अमृत-सागर। येवोनियां भर। आनंदाचा ॥४५॥
कैशा रीती मग। तयाचें उचित। करावें स्वागत। नेणोनि हें ॥४६॥
रंकें तयालागीं। भाजीपाल्याची च। दिली जरी साच। मेजवानी ॥४७॥
तरी भाजीतें हि। मानावें पक्वान्न। तयाचा देखोन। हर्षावेग ॥४८॥
ओंवाळिती दीप। जरी भास्करातें। भक्ति च ती तेथें। ध्यानीं घ्यावी ॥४९॥
कळे बाळकासी। योग्यायोग्य जरी। बाळकत्व तरी। उरे कोठें ॥५०॥
परी जी का होय। बाळकाची माय। पावे ना ती काय। समाधान ॥५१॥
अहो ओढ्यांतील। गढूळ जें तोय। पाठीं देत पाय। आलें जरी ॥५२॥
तरी हो बाजूस। ऐसें बोलोनियां। काय गंगा तया। अव्हेरील ? ॥५३॥
वक्ष:स्थलीं जरी। भृगु मारी लाथ। प्रेमाची ती भेट। मानोनियां ॥५४॥
प्रभु नारायण। तेणें संतोषून। मिरवी भूषण। तयाचें चि ॥५५॥
अंधारें गगन। भरोनि जें गेलें। भेटाया तें आलें। सूर्यालागीं ॥५६॥
तरी अव्हेरूनि। तया होईं दूर। ऐसें तो भास्कर। बोले काय ? ॥५७॥
[1] भेद-बुद्धीचिया। तराजूंत तुम्हां। सूर्याची उपमा। देवोनियां ॥५८॥
तोलिलें तें तैसें। करावें सहन। कृपाळु होवोन। गुरुराया ॥५९॥
देखिलें जयांनीं। ध्यानाचिया डोळां। सद्गुरो दयाळा। तुजलागीं ॥६०॥
वर्णिलें वेदांनीं। तुज शब्दांनीं च। सर्व हि तें साच। साहिलें तूं ॥६१॥
तैसी आम्हांसी हि। करोनियां क्षमा। सोसावी उपमा। एक वेळ ॥६२॥
परी झालों आज। तुझ्या गुणीं [2] लुब्ध। झाला अपराध। तरी होवो ॥६३॥
करा कांहीं परी। करीन स्तवन। जोंवरी हो पूर्ण। तृप्ति माझी ॥६४॥
आतां अर्धपोटीं। नाहीं उठणार। हा माझा निर्धार। गुरुराया ॥६५॥
गीतेचिया मिषें। तुझें निर्विशेष। [3] प्रसाद-पीयूष। सेवावें हें ॥६६॥
इच्छूनियां ऐसें। वर्णूं जातां भलें। भाग्य दुणावलें। नि:संदेह ॥६७॥

---

१ एकच एक अशा तुझ्या ठिकाणीं भेद कल्पून. २ जडलेला. ३ कृपारूपी अमृत.

माझिया वाचेनें। सत्य बोलायाचें। तप केलें साचें। बहु कल्प ॥६८॥
म्हणोनि हें गीता-। रूपी [१] महा-द्वीप। लाधलें [२]अमूप। फळ तीतें ॥६९॥
अहो असामान्य। पुण्यकर्में जीं जीं। नाना जन्मांमाजीं। जोडिलीं तीं ॥७०॥
तुझ्या गुण-गानीं। आवडी देवोन। आज ऋणांतून। मुक्त झालीं ॥७१॥
जीवदशेचिया। घोर महारण्यीं। होतों मी मरणीं। सांपडलों ॥७२॥
आघवी ती माझी। दुर्दशा दारुण। नाहींशी करोन। टाकिलीस ॥७३॥
गीता येणें नांवें। तुझी सर्वश्रेष्ठ। कीर्ति जी बलिष्ठ। सुविख्यात ॥७४॥
अविद्येचा नाश। करोनि ती जगीं। वानावयाजोगी। झाली आम्हां ॥७५॥
कौतुकें सहजें। रंकाचिया घरीं। बैसों आली जरी। महालक्ष्मी ॥७६॥
तरी तयालागीं। निर्धन म्हणोनि। म्हणेल का कोणी। सांगा बरें ॥७७॥
नातरी सुदैवें। तमाचिया स्थानीं। बैसला येवोनि। [३] चण्ड-रश्मि ॥७८॥
तरी मग तें च। होय तेजोमय। विस्मय तो काय। असे येथें ॥७९॥
परमाणूहून। विश्व गमे सान। ज्याचें थोरपण। देखोनियां ॥८०॥
देव तो प्रकट। न होई का साच। भावासारिखा च। भक्तांचिया ॥८१॥
तैसें चि हें माझें। गीतेचें व्याख्यान। जैसें [४] अवघ्राण। [५] ख-पुष्पांचें ॥८२॥
परी ती हि हौस। पुरविली माझी। समर्था अहो जी। गुरुराया ॥८३॥
म्हणोनि मी आतां। आपुल्या प्रसादें। अगाध जीं पदें। गीतेंतील ॥८४॥
विवरोनि स्पष्ट। सांगेन तीं सर्व। म्हणे ज्ञानदेव। निवृत्तीचा ॥८५॥
तरी पंधराव्या। अध्यायामाझारीं। ह्यापरी मुरारी। श्रीहरीनें ॥८६॥
शास्त्रसिद्धान्ताचें। विस्तारें संपूर्ण। केलें विवरण। अर्जुनासी ॥८७॥
वैद्यराजें जैसे। दाखवावे स्पष्ट। असती जे गुप्त। दोष देहीं ॥८८॥
वृक्षाकारमिषें। तैसें उपाधीतें। विवरिलें तेथें। साङ्गोपाङ्ग ॥८९॥
मायोपाधित जें। चैतन्य साचार। कूटस्थ अक्षर। पुरुष तो ॥९०॥
जीवचैतन्यातें। संबोधूनि क्षर। दोन्ही हि प्रकार। सांगितले ॥९१॥
उपाधिरहित। मग जें केवळ। राहिलें निर्मळ। आत्मतत्त्व ॥९२॥

---

१ मोठें बेट; मोठा आश्रय. २ पुष्कळ; अपार. ३ सूर्य. ४ वास घेणें. ५ आकाशाच्या फुलांचे.

उत्तम पुरुष। ऐसें तया नांव। देवोनियां सर्व। स्पष्ट केलें ॥९३॥
तेथें शुद्ध ज्ञान। हें चि एक जाण। प्रभावी साधन। अंतरंग ॥९४॥
ऐसा तया आत्म-। तत्त्वाचा [१] प्रत्यय। घ्यावया उपाय। सांगितला ॥९५॥
सांगावयाजोगें। म्हणोनियां आतां। [२] नुरे चि [२] तत्त्वतां। अध्यायीं ह्या ॥९६॥
परी गुरु-शिष्यां। प्रेमाचा चि भर। लाधला साचार। अखंडित ॥९७॥
असो आघवें हें। तत्त्व असामान्य। जाणोनियां धन्य। झाले ज्ञाते ॥९८॥
परी जे इतर। मुमुक्षु साचार। [३] उत्कंठित फार। जया ठायीं ॥९९॥
पार्था तया मज। पुरुषोत्तमातें। अनन्य जो भेटे। शुद्ध ज्ञानें ॥१००॥
सर्वज्ञ तो जाण। धन्य त्याचा प्रेमा। भक्तीची हि सीमा। तो चि एक ॥१०१॥
ऐशापरी देखा। अध्यायाशेवटीं। त्रैलोक्याचा पति। बोलिला तो ॥१०२॥
आणि संतोषून। तेणें वारंवार। ज्ञान चि साचार। वाखाणिलें ॥१०३॥
जें का संसाराचा। करोनि निरास। पाहत्या जीवास। एकाएकीं ॥१०४॥
पाहतां पाहतां। देई स्वरूपाची। करोनियां साची। ओळखण ॥१०५॥
मग तया जीवा। बैसवी [४] निदानीं। राज-सिंहासनीं । स्वानंदाच्या ॥१०६॥
पाहें धनुर्धरा। जीवासी साचार। ब्रह्मसाक्षात्कार। व्हावयासी ॥१०७॥
शुद्ध ज्ञानाविण। सामर्थ्यसंपन्न। नाहीं च साधन। दुजें ऐसें ॥१०८॥
म्हणोनि निभ्रांत। सर्व साधनांत। ज्ञान चि हें श्रेष्ठ। देव म्हणे ॥१०९॥
आत्म-जिज्ञासू जे। ऐसे होते थोर। तयांनीं साचार। संतोषून ॥११०॥
वाहिलें ज्ञानासी। आदरें सर्वस्व। [५] ओवाळूनि जीव-। भाव तो हि ॥१११॥
घुसूं लागे वेगें। मनीं वस्तु ती च। जडे प्रेम साच। जिये ठायीं ॥११२॥
प्रेमाची हि रीत। ऐसी च निभ्रांत। म्हणोनियां येथ। जिज्ञासु जे ॥११३॥
तयां मुमुक्षूंस। ज्ञानाचें दर्शन। जोंवरी संपूर्ण। नाहीं झालें ॥११४॥
तोंवरी तें कैसें। घडेल म्हणोन। उत्कंठा लागोन। राहे त्यांसी ॥११५॥
घडतां हि कैसें। लाभेल अखंड। म्हणोनि [६] उदंड। झटती ते ॥११६॥
तरी * सम्यक् ज्ञान। व्हावया स्वाधीन। करावे प्रयत्न। कैशा रीती ॥११७॥

---

१ अनुभव. २ खरोखर राहिलें नाहीं. ३ उत्सुकता असलेले. ४ शेवटीं. ५ टाकून. ६ अतिशय.
* परिशिष्ट पहा.

झालें तरी कैसें। व्हावें वृद्धिंगत। लागे हें यथार्थ। जाणावया ।।११८।।
नातरी घालोन। मोह-आवरण। ज्ञानाचें दर्शन। [१]घडों नेदी ।।११९।।
घडतां चि तेथें। आणीतसे विघ्न। नाना दाखवोन। आडमार्ग ।।१२०।।
ऐसें ज्ञानासी ह्या। विरोधी जें कांहीं। येथें लागे तें हि। पहावया ।।१२१।।
मग ज्ञानालागीं। विरोधी साचार। तया देऊं दूर। घालवोनि ।।१२२।।
प्रवेश करोनि। देईल जें ज्ञानीं। तें चि घेऊं ध्यानीं। सर्वभावें ।।१२३।।
ऐसी इच्छा सर्व। ज्ञानजिज्ञासूंनीं। धरिली जी मनीं। तुम्हीं येथें ।।१२४।।
ती च इच्छा पूर्ण। करावया आतां। बोलेल तो [२]भर्ता। [३]पद्मजेचा ।।१२५।।
जेणें योगें ज्ञान। लाभोनि त्वरित। होय वृद्धिंगत। विश्रांति हि ।।१२६।।
देव येथें त्याच। [४]दैवी संपत्तीचें। करितील साचें। निरूपण ।।१२७।।
आणि शुद्ध ज्ञाना। ठेवोनियां दूर। होय जी माहेर। प्रीति-द्वेषां ।।१२८।।
ऐसी आसुरी जी। संपत्ति अघोर। ती हि सविस्तर। सांगतील ।।१२९।।
दैवासुर ऐशा। संपत्ती ह्या दोन। स्वभावें कारण। [५]इष्टानिष्टां ।।१३०।।
नवमाध्यायीं च। संक्षेपें तयांची। उभारणी साची। केली होती ।।१३१।।
तेथें चि तयांचा। संपूर्ण विचार। करणें साचार। होतें योग्य ।।१३२।।
परी दुजें तेव्हां। बोलणें निघोन। गेले तें राहोन। तिये वेळीं ।।१३३।।
म्हणोनि तें येथें। प्रसंगानुसार। देव सविस्तर। बोलतील ।।१३४।।
तोचि हा जाणावा। सोळावा अध्याय। अनुक्रमें होय। ग्रंथाचा ह्या ।।१३५।।
असो ह्या चि दोन्ही। [६]समर्थ संपत्ति। हिताहितीं होती। ज्ञानाचिया ।।१३६।।
तरी मोहरूपी। रात्रीमाजीं भली। धर्मार्थ लाविली। दिवटी जी ।।१३७।।
तेविं मुमुक्षूंस। मार्ग दावी जी का।। संपत्ति ती ऐका। दैवी आधीं ।।१३८।।
मिळविले जाती। ज्या ठायीं अनेक। पदार्थ पोषक। एकमेकां ।।१३९।।
तया पदार्थांच्या। समूहा संपत्ति। ऐसें नांव देती। जगामाजीं ।।१४०।।
दैवी संपत्ति ती। एक चि आश्रय। दैवी गुणां होय। म्हणोनियां ।।१४१।।
तियेलागीं दैवी। संपत्ति हें नांव। सुखाचा उद्भव। असे जेथें ।।१४२।।

---

१ होऊं देत नाहीं. २ पति. ३ लक्ष्मीचा. ४ श्रेष्ठ गुणरूपी वैभवाचें. ५ बरेंवाईट होण्याला. ६ प्रभावी.

श्रीभगवानुवाच-
अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥१॥

तरी दैवीगुणां-। माझारीं प्रमुख। अभय तो देख। आरंभींचा॥१४३॥
ठेविला चि नाहीं। महापुरीं पाय। तरी भय काय। बुडायाचें॥१४४॥
ना तरी जो राहे। पथ्य संभाळून। तयासी कोठून। रोग-चिंता॥१४५॥
तैसें धनंजया। कर्माकर्मीं जाण। सांडोनि मीपण। वागणें जें॥१४६॥
प्रपंचाचें भय। जेणें पावे [१]लय। तयासी 'अभय'। ऐसें नांव॥१४७॥
किंवा ऐक्यभाव। वाढवोनि साच। [२]दुजें हि आत्मा च। मानोनियां॥१४८॥
तेणें भय-वार्ता। दवडणें दूर। अभय साचार। तया नांव॥१४९॥
बुडवाया पाहे। मिठालागीं तोय। तंव पाणी होय। मिठाचें चि॥१५०॥
तैसें आपण चि। अद्वय-स्वरूप। होतां आपोआप। नासे भय॥१५१॥
यथार्थ-ज्ञानाचें। पाठीराखेपण। करी दैवी गुण। हा चि पार्था॥१५२॥
'अभय' म्हणोन। जया देती नांव। तो चि सर्वथैव। जाण ऐसा॥१५३॥
आतां 'सत्व-शुद्धि'। हा जो दुजा गुण। तयाचें लक्षण। सांगों ऐकें॥१५४॥
राखोंडी ती जैसी। जळूं विझूं नेणें। तैसी स्थिति होणें। बुद्धीची जी॥१५५॥
किंवा टाकोनियां। अंवसेची [३]खूट। न चालतां वाट। पाडव्याची॥१५६॥
स्वरूपें चंद्राचें। अति सूक्ष्मपणें। मध्यें च राहणें। असे जैसें॥१५७॥
किंवा वर्षाकाळें। घातली ना भर। नाहीं ग्रीष्में नीर। आटविलें॥१५८॥
माजीं गंगा वाहे। स्वरूपेंकरोन। [४]न्यूनाधिकपण। सांडोनियां॥१५९॥
त्यापरी संकल्प-। विकल्प सांडोनि। रजतम दोन्ही। ओलांडोनि॥१६०॥
निज-स्वरूपाची। आवडी धरोन। तेथें चि जडोन। राहे बुद्धि॥१६१॥
भले बुरे भोग। इंद्रियें दावोत। परी राहे चित्त। निर्विकार॥१६२॥
आपुला वल्लभ। दूर-देशीं जातां। जैसी पतिव्रता। [५]विरहिणी॥१६३॥
लाभ आणि हानि। दोन्ही [६]उपेक्षून। राहे उदासीन। सर्वकाळ॥१६४॥

---

१ नाश. २ दुसरें. ३ शेवट; उणीव. ४ कमीजास्त होणें. ५ पतिवियोगाने पीडित. ६ दुर्लक्षून.

आत्मरूपीं बुद्धि। तैसी लाचावून। राहिली जडोन। अनन्यत्वें ॥१६५॥
तें चि जाण सत्त्व-। शुद्धीचें लक्षण। म्हणे नारायण। * केशिहन्ता ॥१६६॥
आतां आत्मलाभा-। साठीं जें का चांग। ज्ञान किंवा योग। आवडेल ॥१६७॥
तेथें समर्पिली। सर्व चित्तवृत्ति। जैसी पूर्णाहुति। अग्नीमाजीं ॥१६८॥
नातरी कुलीन। घराणें पाहोन। केलें कन्यादान। कुलवंतें ॥१६९॥
असो हा दृष्टांत। [१] पद्मजा ती साच। जैसी [२] मुकुंदीं च। स्थिरावली ॥१७०॥
तैसें अनन्यत्वें। राहणें जें देख। होवोनि स्थायिक। योगज्ञानीं ॥१७१॥
तीच 'योगज्ञान-। व्यवस्थिति' जाण। तो हा तिजा गुण। देव म्हणे ॥१७२॥
आतां असो वैरी। परी तयासी हि। दु:खाचिया डोहीं। देखोनियां ॥१७३॥
कायावाचामनें। [३] न वंचितां धनें। सहाय्य अर्पिणें। यथाशक्ति ॥१७४॥
आक्रमितां वाट। वाटसरू कोणी। बैसला येवोनि। वृक्षातळीं ॥१७५॥
मग वृक्ष तया। पत्र पुष्प छाया। फुलादि द्यावया। सिद्ध जैसा ॥१७६॥
तैसें तन-मन-। धनादि समस्त। असेल जें प्राप्त। दैवयोगें ॥१७७॥
तेणें निवारोन। पीडिताचें दु:ख। तया देणें सुख। प्रसंगें जें ॥१७८॥
तया नांव 'दान'। ऐसें पार्था जाण। मोक्षाचें [४] निधान। दिसे जेणें ॥१७९॥
असो दानगुण। झाला विवरोन। आतां ऐक खूण। दमाची ती ॥१८०॥
होतां चि इंद्रियां-। विषयांची भेट। करी ताटातूट। तयांची जो ॥१८१॥
जैसा शस्त्रधारी। शत्रूतें संहारी। तैसा जो निवारी। विषयांतें ॥१८२॥
घालोनि निर्बंध। सर्व हि इंद्रियां। प्रत्याहाराचिया। हातीं देई ॥१८३॥
देई घालवोनि। [५] प्रवृत्तीसी दूर। चित्तालागीं स्थिर। करोनियां ॥१८४॥
पेटवी दहा हि। इंद्रिय-द्वारांत। अग्नि धगधगीत। वैराग्याचा ॥१८५॥
श्वासोच्छ्‌वासाहून। बहु व्रतें तीक्ष्ण। नित्य रात्रंदिन। आचरितां ॥१८६॥
क्षण हि विश्रांति। घेई ना तो जाण। 'दम' दैवी गुण। पांचवा हा ॥१८७॥
आतां यज्ञाची हि। [६] संक्षेपेंकरोन। सांगतसें खूण। ऐक पार्था ॥१८८॥
तरी आधीं मुख्य। ब्राह्मणांपासोन। स्त्रियादिक जन। सर्व जे जे ॥१८९॥

---

१ लक्ष्मी. २ नारायण; महाविष्णू. ३ न फसवितां. ४ ठेवा. ५ कर्माच्या ओढीला. ६ थोडक्यांत.
* परिशिष्ट पहा.

[१] त्यांहीं अधिकार। आपुला पाहोन। कर्तव्य म्हणोन । करणें जें।।१९०।।
जयालागीं जे जे। होती सर्वोत्तम। ऐसे देवधर्म। पूजनीय।।१९१।।
ते ते यथाशास्त्र। तयें [२] अनुष्ठावे। लक्षण जाणावें। यज्ञाचें हें।।१९२।।
ब्राह्मण तो जैसा। षट्कर्में आचरी। शूद्र नमस्कारी। तयालागीं।।१९३।।
तेणें दोघांसी हि। लाभे सारखें च। एक चि तें साच। यज्ञ-फल।।१९४।।
तैसा अधिकार। आपुला पाहोन। करावें यजन। सर्वांनीं च।।१९५।।
परी फलाशेचें। विष वगळोन। [३] अहंता सांडोन। देह-धर्मीं।।१९६।।
सुखें वेदाज्ञेचें। करावें पालन। तो चि 'यज्ञ' जाण। शास्त्रयुक्त।।१९७।।
[४] कैवल्यमार्गींचा। जाणता साचार। सोबती [५] तो थोर। धनुर्धरा।।१९८।।
भूमीवरी जैसा। चेंडू हापटावा। वेगें हातीं यावा। म्हणोनियां।।१९९।।
नातरी देवोन। पिकाकडे चित्त। पेरावें भूमींत। बीज जैसें।।२००।।
किंवा ठेविलें तें। देखावयासाठीं। पार्था जैसा हातीं। घ्यावा दीप।।२०१।।
नातरी यावया। पत्र पुष्प फळ। वृक्ष-मूळीं जळ। शिंपावें गा।।२०२।।
बहु बोलूं काय। धनंजया देख। आपुलें चि मुख। पहावया।।२०३।।
जैसें आवडीनें। आरशाचें भिंग। [६] चोखाळावें चांग। वेळोवेळां।।२०४।।
तैसा वेदांसी जो। प्रतिपाद्य एक। ईश्वर तो देख। प्राप्त व्हावा।।२०५।।
म्हणोनि वेदांचें। नित्य निरंतर। करावें साचार। अध्ययन।।२०६।।
पावावयासाठीं। तत्त्व तें पवित्र। द्विजीं ब्रह्मसूत्र। अभ्यासावें।।२०७।।
परी जे इतर। तयांलागीं स्तोत्र। किंवा नाम-मंत्र। उक्त होय।।२०८।।
दैवी गुणासी ह्या। 'स्वाध्याय' हें नांव। ऐसें म्हणे देव। पद्मनाभ।।२०९।।
आतां सांगूं तुज। तपाचें लक्षण। ऐक सावधान। धनंजया।।२१०।।
तरी दान-पुण्य। जोडावें म्हणोन। जैसें समर्पण। सर्वस्वाचें।।२११।।
किंवा पत्र-पुष्प-। फलादि देवोन। औषधी वाळोन। जाय जैसी।।२१२।।
किंवा जैसा धूप। आपणा जाळोन। सुगंधें भरोन। टाकी विश्व।।२१३।।
घालितां अग्नींत। कमी भरे [७] तोल। परी चढे मोल। सुवर्णासी।।२१४।।

---

१ त्यांनी. २ आचरावे. ३ अभिमान. ४ मोक्षमार्गांतील. ५ तो यज्ञ. स्वच्छ करावें. ७ वजन.

किंवा जैसा चंद्र। होवोनियां क्षीण। [१]करी [१]वर्धमान। कृष्ण-पक्ष ॥२१५॥
तैसीं देह-प्राण-। इंद्रियें सकळ। सदासर्वकाळ। झिजवोनि ॥२१६॥
स्वरूप-विकास। साधणें संपूर्ण। तें चि तप जाण। धनंजया ॥२१७॥
आतां तपाची च। आणिक हि एक। खूण असे ऐक। सांगूं तुज ॥२१८॥
घालोनियां चोंच। दुग्धीं राजहंसें। निवडावें जैसें। क्षीर-नीर ॥२१९॥
तैसें नाशिवंत। सर्व देहादिक। अविनाश एक। आत्मतत्त्व ॥२२०॥
दावी जन्मतां च। ऐसें जो विवेक। अंतरीं तो देख। जागविणें ॥२२१॥
जैसें एकाएकीं। निद्रेसवें स्वप्न। जातसे बुडोन। जागृतींत ॥२२२॥
तैसें स्वरूपाचें। घडतां दर्शन। तेथें चि विलीन। होय बुद्धि ॥२२३॥
स्वरूपाचें ऐसें। देखणें जें साच। जाण 'तप' तें च। धनुर्धरा ॥२२४॥
जैसें हितकारी। बालकांसी [२]स्तन्य। सारिखें चैतन्य। नाना भूतीं ॥२२५॥
तैसी प्राणिमात्रीं। भली वागणूक। 'आर्जव' तें देख। पंडु-सुता ॥२२६॥

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ऱ्हीरचापलम् ॥२॥

कायावाचामनें। विश्वकल्याणार्थ। वर्तणें यथार्थ। 'अहिंसा' ती ॥२२७॥
तीक्ष्णपणें टाकी। भेदोनि जळासी। तरी मृदु जैसी। पद्मकळी ॥२२८॥
नातरी चंद्राचे। [३]रश्मी जरी झाले। तरी जैसे भले। शीतल ते ॥२२९॥
कडू नव्हे जिव्हे। गोड तरी चांग। दावितां चि रोग। फेडूं शके ॥२३०॥
असे कोठें ऐसी। वनस्पती साची। तरी घेऊं कैंची। उपमेसी ॥२३१॥
बुबुळातें जळ। घांसोनियां जाय। परी खुपे काय। लोचनांसी ॥२३२॥
एऱ्हवीं तें जैसें। पाषाणालागोन। टाकितें भेदोन। तीक्ष्णपणें ॥२३३॥
तैसें [४]संदेहातें। तोडावया जाण। [५]खड्गापरी तीक्ष्ण। असे जें का ॥२३४॥
परी ऐकूं जातां। रसाळता ऐसी। कीं जी माधुरीसी। लाजविते ॥२३५॥
ऐकूं जातां जें का। सहज कौतुकें। अंकुरती मुखें। कानासी च ॥२३६॥
परी ब्रह्मासी हि। जातसे भेदोन। ऐसें खरेपण। थोर ज्याचें ॥२३७॥

---

१ वाढवितो. २ आईचे दूध; थानातील दूध. ३ किरण. ४ संशयाला. ५ तरवारीप्रमाणें.

काय सांगूं फार। प्रियत्वें जें थोर। वंची ना साचार। कोणातें हि ॥२३८॥
असोनि यथार्थ। खुपे ना जें कोणा। जाण तें अर्जुना। 'सत्य' ऐसें ॥२३९॥
एऱ्हवीं मधुर। पारध्याचें गीत। परी करी घात। सावजाचा ॥२४०॥
जरी जाळी अग्नि। उघड सांगोन। जळो साचपण। तयाचें तें ॥२४१॥
वाटे अति गोड। ऐकावया तरी। परी जी [१] जिव्हारीं। झोंबे साच ॥२४२॥
तियेलागीं वाचा। ऐसें म्हणे कोण। जणूं ती जखीण। रूपवती ॥२४३॥
टाळाया अहित। माता वरिवरी। जैसा बाळावरी। दावी राग ॥२४४॥
परी पुष्पापरी। कोमल राहोन। लालनपालन। करी त्याचें ॥२४५॥
तैसें ऐकतां जें। होय सुखावह। साच निःसंदेह। परिणामीं ॥२४६॥
द्वेषादि विकार। [२] नुपजवी चित्तीं। 'सत्य' तें किरीटी। जाण येथें ॥२४७॥
आतां पाषाणासी। घालितां हि पाणी। येती ना फुटोनि। कोंब जैसे ॥२४८॥

नातरी [३] कांजीचें। केलें घुसळण। निघे ना त्यांतून। लोणी जैसें ॥२४९॥
फडा करी काय। भुजंगाची कात। बळें शिरीं लाथ। हाणितां हि ॥२५०॥
किंवा येती काय। फुलें [४] अंबराला। जरी प्राप्त झाला। [५] ऋतुराज ॥२५१॥
किंवा *शुकाठायीं। नुठावा [६] कंदर्प। देखोनियां रूप। रंभेचें हि ॥२५२॥
नातरी राखेंत। ओतिलिया घृत। होय ना प्रदीप्त। अग्नि जैसा ॥२५३॥
तैसें बाळासी हि। जेणें चढे कोप। ऐसे शिव्या शाप। आले कानीं ॥२५४॥
तरी ब्रह्म्याचे हि। धरितां चरण। आयुष्यविहीन। नुठे जैसा ॥२५५॥
तैसा क्रोधावेग। आणूं पाहतां हि। जयाचिया ठायीं। उठे ना तो ॥२५६॥
'अक्रोधत्व' ऐसें। स्थितीसी त्या नांव। सांगतसे देव। श्रीनिवास ॥२५७॥
आतां मृत्तिकेच्या। त्यागें जैसा घट। तंतु-त्यागें पट। त्यजावा गा ॥२५८॥
नातरी बीजाचा। करोनियां त्याग। जैसा सांगोपांग। वटवृक्ष ॥२५९॥
त्यजोनियां भिंत। त्यजावें गा चित्र। स्वप्न हि विचित्र। निद्रात्यागें ॥२६०॥
जलत्यागें जैसे। त्यजावे तरंग। किंवा जैसे मेघ। वर्षात्यागें ॥२६१॥
नातरी धनाचा। करोनियां त्याग। जैसे सर्व भोग। त्यजावे गा ॥२६२॥

---

१ मर्मी.　२ उत्पन्न करीत नाहीं.　३ पेजेचें.　४ आकाशाला.　५ वसंत ऋतु.　६ कामविकार.
* परिशिष्ट पहा.

तैसी देहाहंता। सांडोनि साचार। त्यजावा संसार। बुद्धिमंतीं ॥२६३॥
'त्यागाचें' लक्षण। ऐसें पार्था जाण। म्हणे नारायण। यज्ञभोक्ता ॥२६४॥
तयाचे ते बोल। मानले म्हणोन। पुसे तो अर्जुन। भाग्यवंत ॥२६५॥
म्हणे देवा आतां। 'शांतीचें' लक्षण। उघड करोन। सांगा मज ॥२६६॥
तंव जनार्दन। बोले संतोषून। भलें अवधान। देईं येथें ॥२६७॥
ज्ञेयातें गिळोन। लोपे ज्ञाता-ज्ञान। ती च 'शांति' जाण। धनंजया ॥२६८॥
विश्वाचा पसारा। आपुल्या च ठायीं। बुडवोनि पाहीं। जैशा रीती ॥२६९॥
प्रळयोदकाचा। उसळतां लोट। राहे घनदाट। भरोनियां ॥२७०॥
मग नदी ओघ। आणिक सागर। नुरे व्यवहार। भेदाचा हा ॥२७१॥
तेथें जळाचिया। एकरसतेचा। बोध तरी साचा। कवणासी ॥२७२॥
तैसा होतां ज्ञेय-। ज्ञातृत्वाचा लोप। उरे तें चि रूप। शांतीचें गा ॥२७३॥
आतां देखोनियां। रोगी पीडाग्रस्त। तया रोग-मुक्त। करावया ॥२७४॥
[1] सद्वैद्य पाहे ना। जैसा [2] आपपर। वाहतां अपार। चिंता त्याची ॥२७५॥
किंवा पंकीं गाय। रुतली देखोनि। होय जो का मनीं। कासावीस ॥२७६॥
धड कीं भाकड। ऐसें का तो पाहे। तिज काढिताहे। पंकांतूनि ॥२७७॥
नातरी देखोन। बुडत्यालागोन। मांग कीं ब्राह्मण। असे कोण ? ॥२७८॥
विचारी ना ऐसें। [3] कनवाळू [3] जन। राखूं जाणे प्राण। तयाचे गा ॥२७९॥
किंवा वनीं [4] माय। पापियानें कोणी। उघडी करोनि। टाकितांच ॥२८०॥
तिजलागीं वस्त्र। नेसविल्याविण। घेईना दर्शन। सभ्य जैसा ॥२८१॥
तैसें अज्ञानीं वा। प्रमादीं वा कोणी । राहिले बुडोनि। दैवहीन ॥२८२॥
म्हणोनि जे झाले। निंदेलागीं पात्र। सर्वदा सर्वत्र। जगामाजीं ॥२८३॥
तयांलागीं गुण। आपुले देवोन। टाकिती काढोन। [5] शल्यें त्यांचीं ॥२८४॥
आणिकांचें दोष। भले चोखाळून। तयांचें दर्शन। घ्यावें जैसें ॥२८५॥
पूजोनियां जैसें। पहावें दैवत । पेरोनियां शेत । घ्यावें पीक ॥२८६॥
किंवा अतिथीस। तोषवोनि चांग। जैसा घ्यावा मग। आशीर्वाद ॥२८७॥

---

१ भला वैद्य. २ आपला आणि परका. ३ दयाळु मनुष्य. ४ आई; (स्त्री). ५ दुःखें.

तैसें आपुलिया। सद्गुणेंकरोन। आणिकाचें न्यून। [१]फेडोनियां ॥२८८॥
भलेपणें घ्यावें। तयाचें दर्शन। 'अपैशून्य' जाण। तें चि पार्था ॥२८९॥
तेविं कोणासी हि। नये बोलूं वर्मीं। नये घालूं कर्मीं। पापात्मक ॥२९०॥
नये हांका मारूं। कोणासी साचार। दोषांचा उच्चार। करोनियां ॥२९१॥
पडत्यासी कांहीं। शोधोनि उपाय। उठता तो होय। ऐसें [२]कीजे ॥२९२॥
करोनि उघड। परी त्याचें व्यंग। वर्मावरी डाग। देऊं नये ॥२९३॥
उत्तमासारिखा। नीच हि मानावा। दोष न पहावा। निजदृष्टी ॥२९४॥
धनंजया जाण। तो हा दैवी गुण। जया 'अपैशुन'। ऐसें नांव ॥२९५॥
हें चि असे एक। मोक्षमार्गीं देख। साधन प्रमुख। सुखाचें गा ॥२९६॥
आतां 'दया' नांवें। जो का दैवी गुण। तयाचें लक्षण। ऐक सांगूं ॥२९७॥
शांतवितां सर्वां। सानथोर नेणे। जैसें का चांदिणें। [३]पूर्णेन्दूचें ॥२९८॥
तैसें दयालुत्वें। नेणे-श्रेष्ठ हीन। निवारितां शीण। दुःखितांचा ॥२९९॥
किंवा जैसें जळ। अर्पोनि सर्वस्व। राखे जाता जीव। तृणाचा हि ॥३००॥
तैसी परपीडा। देखोनियां डोळां। मनीं कळवळा। उपजोनि ॥३०१॥
प्राणसर्वस्वाचें। दान केलें साच। तरी तें थोडें च। ऐसें मानी ॥३०२॥
मार्गांतील [४]फोंड। भरल्यावांचोनि। पुढें जैसें पाणी। जाऊं नेणे ॥३०३॥
तैसें पीडितासी। करोनि संतुष्ट। मग घेई भेट। सुखें त्याची ॥३०४॥
अगा तीक्ष्ण कांटा। बोंचतां पायांत। उठे अंतरांत। व्यथा जैसी ॥३०५॥
तैसें आणिकांतें। देखोनि दुःखित। कळवळे चित्त। [५]कारुण्यानें ॥३०६॥
किंवा शीतलता। लाभतां पायांसी। गारवा डोळ्यांसी। येई जैसा ॥३०७॥
तैसें आणिकांचें। सुख विलोकून। स्वभावें आपण। सुखावे जो ॥३०८॥
बहु बोलूं काय। पार्था जैसें तोय। [६]तृषार्तासी होय। जगामाजीं ॥३०९॥
तैसें दुःखितांचें। करावें सांत्वन। म्हणोनि जीवन। जयाचें गा ॥३१०॥
मूर्तिमंत दया। तो चि तो म्हणोनि। तयाचा मी ऋणी। जन्मतां च ॥३११॥
[७]पद्मिनी सर्वस्व। अर्पी भास्करातें। परी सुगंधातें। शिवे ना तो ॥३१२॥

---

१ दूर करून. २ करावें. ३ पौर्णिमेच्या चंद्राचें. ४ खड्डा. ५ दयेनें. ६ तहानलेल्याला. ७ कमळ.

किंवा ऋतुराज। जातसे सांडोनि। आल्या अक्षौहिणी। वनश्रीच्या ॥३१३॥
ऋद्धिसिद्धींसह। रमा येती होय। परी गणी काय। महाविष्णु ॥३१४॥
इहपर भोग। तैसे झाले प्राप्त। तरी जो अलिप्त। मनामाजीं ॥३१५॥
काय सांगूं फार। रमावें विषयीं। ऐसें कौतुकें हि। इच्छी ना जो ॥३१६॥
ऐसी गुडाकेशा। गळे अभिलाषा। 'अलोलुपत्व' दशा। ती च जाण ॥३१७॥
मधमाशियांसी। आवडे मोहोळ। किंवा जैसें जळ। जळचरां ॥३१८॥
किंवा पक्षियांसी ॥ सदासर्वकाळ। जैसें अंतराळ। मोकळें हें ॥३१९॥
नातरी मातेची। बाळावरी माया। तैसें धनंजया। 'मार्दव' तें ॥३२०॥
[१] मलय-वायूची। वसंत-लहरी। हळुवार करी। स्पर्श जैसा ॥३२१॥
नातरी [२] प्रियाचें। होतां चि दर्शन। जैसें समाधान। डोळेयांसी ॥३२२॥
किंवा *कांसवीची। पिलावरी दृष्टि। तैसी चित्तवृत्ति। भूतमात्रीं ॥३२३॥
सुगंधी स्वादिष्ट। निर्मळ कापूर। खातां पथ्यकर। जरी होता ॥३२४॥
तरी उपमा ती। शोभती तयाची। मृदुलत्वें साची। मार्दवासी ॥३२५॥
वायुतेजादिक। पोटीं सांठवून। सामावे गगन। अणूमाजीं ॥३२६॥
आणि विश्वाकारा-। सारिखा आकार। धरोनि साचार। राहे जैसें ॥३२७॥
काय सांगूं ऐसें। जयाचें जीवित। होय विश्व-हित। साधावया ॥३२८॥
तें चि मार्दवाचें। लक्षण निभ्रांत। ऐसें माझें मत। जाण पार्था ॥३२९॥
आतां भूपतीचा। होतां पराजय। लाजेनें तो होय। कष्टी जैसा ॥३३०॥
किंवा मानी जन। दशा पावे हीन। तरी खालीं मान। घाली जैसा ॥३३१॥
अंत्यजाच्या दारीं। पातला चुकोन। संन्यासी लाजोन। जाय जैसा ॥३३२॥
किंवा रणांतून। पळोनियां जाणें। होय लाजिरवाणें। क्षत्रियासी ॥३३३॥
पति होतां मृत। मुख दावायासी। लाज वाटे जैसी। सतीलागीं ॥३३४॥
सज्जना निंदेचें। लागे गालबोट। किंवा उठे [३] कुष्ठ। रूपवंता ॥३३५॥
मग तें तयातें। लाज आणी जैसें। प्राणसंकटसें। वाटोनियां ॥३३६॥
तैसें आपणातें। देह चि मानोनि। रहावें होवोनि। भूमिभार ॥३३७॥

---

१ मलयपर्वतावरील (चंदनानें सुगंधित अशा) वाऱ्याची. २ आवडत्या माणसाचें. ३ कोड.
* परिशिष्ट पहा.

पुन्हां पुन्हां जन्म। घेवोनि मागुतें। जावें मृत्यु-पंथें। वारंवार ॥३३८॥
ऐसा गर्भवास। सोसावया पुन्हां। जयाचिया मना। वाटे लाज ॥३३९॥
बहु बोलूं काय। देह चि आपण। ऐसें समजोन। [१] दृढपणें ॥३४०॥
नाम आणि रूप। मोहें स्वीकारणें। नसे लाजिरवाणें। तयाहूनि ॥३४१॥
दुर्दशा ही ऐसी। देखोनियां साची। घेती शरीराची। शिसारी जे ॥३४२॥
तयां साधुजनां। देहीं अनावडी। परी तेथें गोडी। कोडग्यासी ॥३४३॥
आतां धनंजया। दोरी तुटतां च। बाहुलीचा नाच। थांबे जैसा ॥३४४॥
तैसा [२] सदभ्यासें। होतां * प्राणजय। मग कर्मेंद्रिय-। गति खुंटे ॥३४५॥
किंवा मावळतां। जैसा दिनकर। लोपतो विस्तार। किरणांचा ॥३४६॥
तैसे ज्ञानेंद्रिय-। व्यापार सर्वथा। बंद होती पार्था। मनोजयें ॥३४७॥
मन-पवनातें। [३] नियमितां पाहीं। इंद्रियें दहा हि। होती पंगु ॥३४८॥
'अचापल्य' ऐसें। गुणातें ह्या नाम। धनंजया वर्म। ध्यानीं घेईं ॥३४९॥

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥३॥

पतीसाठीं साध्वी। गणी ना मृत्यूसी। उडी घाली जैसी। चितेमाजीं ॥३५०॥
तैसें विषयांतें। लोटोनियां दूर। भेटाया साचार। आत्मनाथा ॥३५१॥
जे का [४] आक्रमिती। अरुंद बिकट। आकाशाचा पंथ। आवडीनें ॥३५२॥
विधि-निषेधाचा। बंध जयां नाहीं। महासिद्धी त्या हि। नावडती ॥३५३॥
ऐशापरी पार्था। सर्वेश्वराकडे। स्वभावतां ओढे। चित्त जेव्हां ॥३५४॥
तें चि आध्यात्मिक। तेजाचें लक्षण। तुज विवरोन। सांगितलें ॥३५५॥
आतां असंख्यात। [५] रोमां देह [६] वाहे। परी वाहतों हें। नेणे जैसा ॥३५६॥
तैसें सर्वकांहीं। करोनि सहन। नाहीं अभिमान। श्रेष्ठत्वाचा ॥३५७॥
धनंजया ती च। 'क्षमा' ऐसें जाण। धृतीचें लक्षण। ऐक सांगों ॥३५८॥
आले उसळोन। विकारांचे वेग। खवळले रोग। पूर्वकर्में ॥३५९॥
प्रियाचा वियोग। अप्रियाचा योग। प्राप्त झाला भोग। कोणता हि ॥३६०॥

---

१ पक्कें. २ चांगल्या अभ्यासानें. ३ ताब्यांत ठेवल्यावर. ४ चालतात. ५ केसांना. ६ धारण करतो.
* परिशिष्ट पहा.

किंवा आघवीं हीं। जरी एका वेळीं। घोघावत आलीं। महापूरें ॥३६१॥
तरी जो खंबीर। जणूं अगस्ती च। ती च 'धृति' साच। जाण पार्था ॥३६२॥
नातरी धूमाचा। उसळला लोट। जरी आकाशांत। एकाएकीं ॥३६३॥
तरी वारेयाची। एक चि झुळूक। तयालागीं देख। गिळी जैसी ॥३६४॥
तैसे तिन्ही ताप। येतां उसळोन। टाकी जो गिळोन। तयांलागीं ॥३६५॥
चित्तक्षोभावेळीं। टिके ऐसें धैर्य। ती च 'धृति' होय। धनंजया ॥३६६॥
शुद्ध सुवर्णाचा। ठेविला [१] कलश। गंगेचें [२] पीयूष। भरोनियां ॥३६७॥
तयासारिखी च। [३] सबाह्य शुद्धता। 'शौच' तें चि पार्था। जाण ऐसें ॥३६८॥
शरीरें निष्काम। कर्म-व्यवहार। विवेक साचार। अंतरांत ॥३६९॥
तरी तो निभ्रांत। जाण पां किरीटी। शुचित्वाची मूर्ति। अंतर्बाह्य ॥३७०॥
आतां पाप ताप। फेडोनि टाकित। झाडांसी पोषीत। तीरींचिया ॥३७१॥
जैसें धनंजया। भागीरथी-तोय। भेटावया जाय। सागरातें ॥३७२॥
नातरी जगाचें। [४] तिमिर फेडीत। प्रफुल्ल करीत। पद्मिनींतें ॥३७३॥
नित्य प्रदक्षिणा। करावया जाण। सूर्यनारायण। निघे जैसा ॥३७४॥
तैसीं बांधिलीं जीं। तयांलागीं सोडी। बुडालीं तीं काढी। बाहेरी जो ॥३७५॥
ऐसे जाहले जे। [५] भवपीडाग्रस्त। तयांचें संकट। निवारी जो ॥३७६॥
काय सांगूं फार। ऐसें रात्रंदिन। सुख-संवर्धन। [६] आणिकांचें ॥३७७॥
करीत करीत। नित्य अखंडित। साधी आत्महित। स्वभावें जो ॥३७८॥
परी साधावया। आपुला कार्यार्थ। चिंती ना अहित। कोणाचें हि ॥३७९॥
'अद्रोहत्व' ऐसें। देख मूर्तिमंत। सांगितलें येथ। तुजलागीं ॥३८०॥
शिवाचिया माथां। येवोनियां साच। पावली संकोच। गंगा जैसी ॥३८१॥
मान्यपणें तैसें। सन्मानितां कोणी। लज्जित होवोनि। राहणें जें ॥३८२॥
तें चि 'अमानित्व'। किती वर्णूं आतां। मागें जें सर्वथा। सांगितलें ॥३८३॥
ऐशापरी पार्था। सव्वीस हे गुण। मूर्तिमंत जाण। ब्रह्मैश्वर्य ॥३८४॥
आणि मोक्षरूपी। राजा सार्वभौम। जणूं हें इनाम। तयाचें गा ॥३८५॥

---

१ घडा; कळशी. २ अमृत. ३ आंतबाहेर. ४ अंधार. ५ संसारदु:खानें गांजलेले. ६ दुसऱ्यांचें.

किंवा सव्वीस हि। गुणरूपी [1] तीर्थी । परिपूर्ण जी ती। नित्य नवी ॥३८६॥
दैवी संपत्तीची। जणूं ही गंगा च। भाग्यें आली साच। [2] विरक्तांच्या ॥३८७॥
किंवा मुक्ति-बाला। शोधी विरक्ताला। गुण-पुष्प-माला। घेवोनि ही ॥३८८॥
ना तरी सव्वीस। गुणरूपी ज्योती। आरती ती हातीं। धरोनियां ॥३८९॥
जणूं ओंवाळाया। गमे आली गीता। प्रेमें निज-नाथा। आत्मराजा ॥३९०॥
किंवा जी का दैवी। संपत्तीची शिंप। होती गीतारूप। सागरांत ॥३९१॥
तया शिंपींतून। निघालीं बाहेर। मोत्यें हीं सुंदर। गुणरूपी ॥३९२॥
काय सांगूं फार। जयांचा साचार। [3] व्हावा [3] आविष्कार। आपोआप ॥३९३॥
ऐशापरी दैवी। संपत्तीचे गुण। येथें विवरोन। सांगितले ॥३९४॥
आतां जी आसुरी। संपत्तीची वेली। असे बळावली। नाना दुःखीं ॥३९५॥
जरी दोषरूपी। कंटकांनीं युक्त। तरी ती हि येथ। निरूपीन ॥३९६॥
जरी उपयोगी। नव्हे चि ती पार्था। त्याज्य चि सर्वथा। होय जरी ॥३९७॥
त्यजावयालागीं। तरी ती हि जाण। भलें अवधान। देईं आतां ॥३९८॥
तरी नरकींचें। वाढवाया दुःख। जेथें झाले एक। सर्व दोष ॥३९९॥
ती ही महा-घोर। आसुरी संपत्ति। येथें तुजप्रति। निवेदीन ॥४००॥
किंवा विषवर्ग। होतां एकत्रित। तया कालकूट। ऐसें नांव ॥४०१॥
तैसी च ही सर्व। दोषांची [4] लगड। करोनि उघड। दावूं तुज ॥४०२॥

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥४॥

तरी तयां दोषां। आसुरांमाझारीं। मुख्य तो निर्धारीं। दंभ ऐसा ॥४०३॥
तीर्थ चि तें परी। करी अधःपात। निंदितां जनांत। निजमाता ॥४०४॥
किंवा ब्रह्मविद्या। [5] श्रीगुरूपदिष्ट। परी चव्हाट्यांत। मांडितां ती ॥४०५॥
हितपरिणामी। असोनि हि जाण। होतसे कारण। अहितासी ॥४०६॥
ना तरी जी वेगें। काढी पैल तटा। गटंगळ्या खातां। महापूरीं ॥४०७॥
बांधितां ती नाव। शिरीं आपुल्या च। बुडविते साच। जैशा रीती ॥४०८॥

---

१ तीर्थांनीं. २ विरक्त पुरुषांच्या. ३ प्रकट (स्पष्ट) व्हावेत. ४ चीप; गट्टा. ५ सद्गुरूंनीं शिकविलेली.

किंवा जीवितासी। कारण जें अन्न। जरी वाखाणून। सेविलें तें ॥४०९॥
तरी अजीर्णांशें। तें चि जैसें देख। होतसें मारक। विषाऐसें ॥४१०॥
तैसा दानधर्म। घडला हातून। दाविला बोलून। [१]लौकिकार्थ ॥४११॥
इहपरलोकीं। तारक तो साच। तरी दोषासी च। [२]हेतु होय ॥४१२॥
म्हणोनियां धर्म। केला जो आपण। जगीं [३]फोकारून। वाखाणिला ॥४१३॥
तरी नव्हे धर्म। अधर्म तो जाण। 'दंभाची' ही खूण। सांगितली ॥४१४॥
आतां येतां ट फ। मूर्खाचिया जिभे। जैसा ब्रह्मसभे। तुच्छ लेखी ॥४१५॥
किंवा ठाणबंदी। घोडा जैसा पाहीं। ऐरावतातें हि। जुमानी ना ॥४१६॥
किंवा स्वर्ग तो हि। ठेंगणा च वाटे। जैसा सरडातें। कुंपणींच्या ॥४१७॥
किंवा तृणाचें हि। लाभतां [४]इंधन। अग्नि उफाळून। नभीं धांवे ॥४१८॥
ना तरी [५]थिल्लरीं। राहिला जो मासा। गणी ना तो जैसा॥ सागरातें ॥४१९॥
किंवा एक दिन। लाभतां परान्न। जाय फुशारून। रंक जैसा ॥४२०॥
तैसा दारा धन। स्तुति विद्या मान। लाभतां माजोन। जाय जो का ॥४२१॥
आपुलें मंदिर। मोडी भाग्यहीन। साउली देखोन। आभाळाची ॥४२२॥
किंवा मृग-जळ। देखोनि [६]आगळें। फोडी जैसें तळें। मति-मंद ॥४२३॥
बहु बोलूं काय। प्राप्त होतां [७]वित्त। होणें जें उन्मत्त। ऐशापरी ॥४२४॥
तो चि 'दर्प' ऐसें। जाण धनंजया। वेगळें सांगाया। नको कांहीं ॥४२५॥
आतां वेदांठायीं। जगासी विश्वास। [८]विश्वासी तो ईश। पूज्य होय ॥४२६॥
तेजें परिपूर्ण। आदित्यासमान। असे दुजा कोण। जगामाजीं ॥४२७॥
सार्वभौमपद। हें चि एक जाण। जगासी ठिकाण। आकांक्षेचें ॥४२८॥
कल्पान्तीं हि मृत्यु। आपणां न यावा। आवडे हें सर्वां। निर्विवाद ॥४२९॥
म्हणोनि उत्साहें। वेदा-ईश्वरातें। लागे वानायातें। विश्वजन ॥४३०॥
तरी तें ऐकोन। मत्सर जो वाहे। गर्वें बोलताहे। फुगोनियां ॥४३१॥
म्हणे एका घांशीं। भक्षीन तो ईश। घालीन मी विष। वेदांलागीं ॥४३२॥
ऐसी मिरवोनि। आपुली प्रतिष्ठा। निज-बळ वृथा। घालवी जो ॥४३३॥

---

१ कीर्तीसाठीं. २ कारण. ३ डांगोरा पिटून. ४ जळण. ५ डबक्यांत. ६ मोठें. ७ द्रव्य. ८ जगाला.

नावडे पतंगा। जैसी दीपज्योति। आदित्याची [1] खंती। काजव्यासी ।।४३४।।
किंवा टिटवीनें। मांडिलें साचार। जैशापरी वैर। सागराशीं ।।४३५।।
तैसा अहंतेच्या। भुलीमाजीं पाहीं। नाम ईशाचें हि। [2] साहेना जो ।।४३६।।
आणि श्रुतीलागीं। म्हणे मज कैसी। आली छळायासी। सवत ही ।।४३७।।
ऐसा मान्यतेचा। ताठा बळवंत। झाला जो उन्मत्त। अहंतेनें ।।४३८।।
[3] रौरवाचा रूढ। मार्ग चि तो जाण। तया 'अभिमान'। नांव ऐसें ।।४३९।।
आतां आणिकांचा। देखोनि संतोष। चढे क्रोध-विष ।। वृत्तीलागीं ।।४४०।।
तापल्या तेलांत। उठे जैसा जाळ। थंडगार जळ। टाकितां चि ।।४४१।।
नातरी [4] जंबूक। जळे जैसा पोटीं। पडतां चि दृष्टी। [5] निशानाथ ।।४४२।।
विश्वाचें आयुष्य। उजळिता सूर्य। पावतां उदय। प्रात:काळीं ।।४४३।।
देखोनि तें जैसे। पापी घुबडाचे। डोळे जाती साचे। फुटोनियां ।।४४४।।
देखोनि प्रभात। जगा होय सुख। परी चोरां दु:ख ।मृत्यूहून ।।४४५।।
सर्पालागीं दूध। पाजिलें केवळ। तरी तो [6] गरळ। ओकी जैसा ।।४४६।।
[7] प्राशोनि अगाध। सागराचें जळ। होतसे प्रबळ। वडवाग्नि ।।४४७।।
तयाची तों भूक। वाढे चि अधिक। शमे ना ती देख। कदाकाळीं ।।४४८।।
तैसें देखे विद्या। विनोद वैभव। इत्यादिक दैव। आणिकांचें ।।४४९।।
तों तों दुणें वाढे। रोषाचें प्रमाण। 'क्रोधाचें' लक्षण। जाण ऐसें ।।४५०।।
आतां ज्याचें मन। पाहतां केवळ। सर्पाचें चि बीळ। ऐसें वाटे ।।४५१।।
जणूं तीक्ष्ण बाण। सोडी ज्याची दृष्टि। बोलणें ती वृष्टि। निखाऱ्यांची ।।४५२।।
आणि इतर हि। ज्या ज्या क्रिया होती। जणूं त्या कर्वती। पोलादाच्या ।।४५३।।
ह्यापरी कठोर। जयाचा आचार। देखसी साचार। अंतर्बाह्य ।।४५४।।
मनुष्यांमाझारीं। अधम तो साच। जाण पां मूर्ती च। काठिण्याची ।।४५५।।
आतां तुज सांगूं। अज्ञानाची खूण। देईं अवधान। धनंजया ।।४५६।।
तरी पाहें जैसें। शीत उष्ण कांहीं। स्पर्शज्ञान नाहीं। पाषाणातें ।।४५७।।
किंवा जन्मांधातें। रात्रि आणि दिन। ऐसें भेद-ज्ञान। नसे जैसें ।।४५८।।

---

१ तिटकारा.　२ सहन करीत नाहीं.　३ महानरकाचा.　४ कोल्हा.　५ चंद्र.　६ विष.　७ पिऊन.

किंवा खाद्याखाद्य। नेणोनियां अग्नि। मिळे तें गिळोनि। टाकी जैसें ॥४५९॥
ना तरी हें सोनें। आणि हें लोखंड। ऐसा नाहीं भेद। परिसासी ॥४६०॥
किंवा रिघोनि हि। रसीं नानाविध। चाखूं नेणे स्वाद। पळी जैसी ॥४६१॥
किंवा मार्गामार्ग। न पाहतां वीरा। वाहे जैसा वारा। स्वच्छंदानें ॥४६२॥
तैसा कार्याकार्य-। विवेकीं आंधळा। जाण तो पुतळा। अज्ञानाचा ॥४६३॥
किंवा चोख [१] मैळ। ऐसें नेणे बाळ। देखे तें केवळ। मुखीं घाली ॥४६४॥
तैशापरी पाप-। पुण्याची खिचडी। खातां नेणे गोडी। बुद्धि ज्याची ॥४६५॥
ऐशी दशा जी का। अज्ञान तें जाण। नाहीं अप्रमाण। बोलणें हें ॥४६६॥
ऐशापरी साही। दोषांचें लक्षण। येथें विवरून। सांगितलें ॥४६७॥
ह्या चि साही दोषीं। सर्वथा किरीटी। बळावे संपत्ति। आसुरी ही ॥४६८॥
सुंदरीचा बांधा। दिसो किरकोळ। विषयीं प्रबळ। परी जैसी ॥४६९॥
* अग्नि तरी तीन। तरी तयां पाहीं। पुरे ना विश्व हि। भक्षावया ॥४७०॥
नातरी * त्रिदोषीं। चुके ना मरण। जातां हि शरण। [२] विधात्यासी ॥४७१॥
तैसे चि हे दोष। वरी द्विगुणित। म्हणोनि अत्यंत। दुःखकारी ॥४७२॥
आसुरी संपत्ति। उभारली पाहीं। ह्या चि दोषीं साही। संपूर्णत्वें ॥४७३॥
म्हणोनि ही उणी। लेखावी ना कोणी। घालिते दारुणीं। नरकीं जी ॥४७४॥
* पाप-ग्रह-पंक्ति। यावी एके राशी। किंवा निंदकाशीं। सर्व पापें ॥४७५॥
किंवा सर्व रोगीं। व्यापावें शरीर। येतांचि साचार। मृत्यु-काळ ॥४७६॥
नातरी कुयोग। मिळोनियां यावे। जैसे का स्वभावें। [३] कुमुहूर्तीं ॥४७७॥
किंवा शेळियेसी। [४] डंखी मृत्युकाळीं। जैसी का इंगळी। सातनांगी ॥४७८॥
तैसे हे हि साही। होती एकत्रित। साधावया घात। मानवाचा ॥४७९॥
विश्वासला त्यासी। चोराहातीं द्यावें। श्रांतासी लोटावें। महापूरीं ॥४८०॥
तैसा मानवाचा। करिती विनाश। हे चि साही दोष। दंभादिक ॥४८१॥
मोक्षमार्गीं ह्यांचा। होतां [५] शिडकाव। मोहें बुडे जीव। संसारांत ॥४८२॥
मग अंतीं बैसे। स्थावराच्या तळीं। उतरोनि खालीं। जन्मोजन्मीं ॥४८३॥

---

१ मळलेलें; घाणेरडें. २ ब्रह्मदेवाला. ३ अशुभ वेळीं. ४ दंश करतें. ५ वर्षाव; सडा.
* परिशिष्ट पहा.

असो साही दोष। हे चि वाढविती। आसुरी संपत्ति। जीवाठायीं ॥४८४॥
ह्यापरी प्रसिद्ध। संपदा ह्या दोन्ही। येथें विभागोनि। दाखविल्या ॥४८५॥

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥३॥

दोहींमाजीं दैवी। संपदा जी श्रेष्ठ। जाण सुप्रभात। मोक्षाची ती ॥४८६॥
दुजी संपत्ति जी। आसुरी ती साच। लोह-श्रृंखला च। मोहरूपी ॥४८७॥
परी आसुरी ही। देखोनि संपत्ति। नको धरूं चित्तीं। भय कांहीं ॥४८८॥
सांगें धनंजया। दिनालागीं काय। वाटतसे भय। [1]रजनीचें ॥४८९॥
येती आश्रयास। जयाचिया ठायीं। दंभादिक साही। दोष ऐसे ॥४९०॥
आसुरी संपत्ति। तयासी च जाण। घालिते बंधन। महा-घोर ॥४९१॥
परी अर्जुना तूं। दैवी-गुण-ठेवा। घेवोनि बरवा। जन्मलासी ॥४९२॥
ह्या चि संपत्तीचा। होवोनियां धनी। साधीं तूं [2]निदानीं। मोक्ष-सुख ॥४९३॥

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥

आतां दैवी किंवा। आसुरी संपत्ति। येथें जयाप्रति। जोडली जी ॥४९४॥
तयांची तैसी ती। [3]रहाटी हि भिन्न। स्वभावतां जाण। धनंजया ॥४९५॥
[4]निशाचरें जैसीं। निज-व्यवहार। करिती साचार। [5]निशाकालीं ॥४९६॥
परी सूर्योदयीं। मानवादिकांचा। सुरू होय साचा। सुव्यापार ॥४९७॥
तैसे दैवी किंवा। आसुरी जे होती। आपुलाल्या रीती। वागती ते ॥४९८॥
त्रयोदशाध्यायीं। ज्ञान-लक्षणांचा। [6]उहापोह साचा। केला जेव्हां ॥४९९॥
तेव्हां तुज दैवी। आचाराची रीत। सांगितली तेथ। विस्तारोनि ॥५००॥
आसुरी सृष्टीची। येथें बोलूं मात। भला दत्तचित्त। होईं आतां ॥५०१॥
तरी वाद्याविण। जैसा नाहीं नाद। नातरी सुगंध। पुष्पाविण ॥५०२॥
देहाश्रयाविण। तैसी ही आसुर। एकली गोचर। नोहे पार्था ॥५०३॥
शुष्क काष्ठामाजीं। होतां चि [7]प्रविष्ट। दिसूं लागे स्पष्ट। अग्नि जैसा ॥५०४॥

---

१ रात्रीचें. २ शेवटीं. ३ रीत, वागणूक. ४ पिशाच्चें. ५ रात्रीं. ६ चर्चा. ७ शिरतांच.

तैसी प्राणियाच्या । देहीं सामावली। येतसे ही भली। प्रत्ययासी ।।५०५।।
उसासवें वाढ। रसाची हि जैसी। देहासवें तैसी। ही हि वाढे ।।५०६।।
आतां ऐशा दोषीं। जे का परिपूर्ण। तयांचें वर्णन। करूं येथें ।।५०७।।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ।।७।।

पुण्य तें करावें। पाप नाचरावें। नाहीं च हें ठावें। तयांलागीं ।।५०८।।
येण्याजाण्यासाठीं। न ठेवितां द्वार। बांधूं लागे घर। कोशकीट ।।५०९।।
मग आवेशें तें। बांधितां बांधितां। कोंडोनि घे स्वतां। आपणासी ।।५१०।।
किंवा जैसा मूर्ख। आपुलें सकळ। देई भांडवल। चोरांलागीं ।।५११।।
मागुतें तें हातीं। येईल का नाहीं। विचार हा कांहीं। न पाहतां ।।५१२।।
तैसा चि प्रवृत्ति-। निवृत्ति-विवेक। नेणती ते लोक। आसुरी जे ।।५१३।।
आणि तयांलागीं। [१] शुचित्वाची कांहीं। स्वप्नांत हि नाहीं। ओळखण ।।५१४।।
अगा कोळसा हि। काळिमा सांडील। होईल [२] धवल। कावळा हि ।।५१५।।
राक्षसालागीं हि। उपजेल त्रास। देखोनियां मांस। एकवेळ ।।५१६।।
परी आसुरी जे। तयांचिया ठायीं। शुचित्व तें नाहीं। लेशमात्र ।।५१७।।
धनंजया जाण। नित्य अपवित्र । जैसें मद्यपात्र। तैसे ते हि ।।५१८।।
करावें सुकृत। [३] शास्त्रविधानोक्त। किंवा घ्यावी रीत। वडिलांची ।।५१९।।
स्वधर्मानुसार। ठेवावा आचार। ऐसा सद्विचार। नेणती ते ।।५२०।।
शेळीचें चरणें। वाऱ्याचें धावणें। आगीचें जाळणें स्वैर जैसें ।।५२१।।
तैसे [४] स्वैराचारी। आसुरी ते नर। सत्यासवें वैर। सदा ज्यांचें ।।५२२।।
मारोनियां नांगी। जरी विंचवासी। येती करायासी। गुदगुल्या ।।५२३।।
तरी सत्य-वाचा। निघे मुखांतून। आसुरी जे जन। तयांचिया ।।५२४।।
सुटेल सुगंध। जरी गुद-द्वारा। जोडेल आसुरां। तरी सत्य ।।५२५।।
ऐसे आसुरी ते। कांहीं केल्याविण। स्वभावतां जाण। अमंगळ ।।५२६।।
आतां बोलणें हि। कैसें विलक्षण। प्रसंगें सांगेन। ऐक पार्था ।।५२७।।

---

१ पवित्रपणाची. २ शुभ्र; पांढरा. ३ शास्त्रांत सांगितल्याप्रमाणें. ४ मन मानेल तसे वागणारे.

वांकडें सर्वांगीं। उंटाचें शरीर। तैसी च साचार। स्थिति ह्यांची ।।५२८।।
किंवा धुरांड्याच्या। तोंडांतुनी साच। निघे धुराचा च। लोट जैसा ।।५२९।।
तैसें चि भाषण। आसुरांचें जाण। सांगूं विवरून। तें चि आतां ।।५३०।।

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्।
अपरस्परसम्भूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ।।८।।

तरी विश्वाचें हें। अनादि ठिकाण। [१] नियंता तो जाण। परमेश ।।५३१।।
न्याय-अन्यायाचा। द्यावया निर्णय। येथ वेद होय। न्यायाधीश ।।५३२।।
तयाचिया दृष्टी। अन्यायी जे होती। शिक्षा ते भोगिती। नरकाची ।।५३३।।
परी नीति-न्यायें। वागती तयांस। सुखें स्वर्गीं वास। घडे पार्था ।।५३४।।
ऐसी अनादि जी। विश्वाची व्यवस्था। सर्वथा ती वृथा। बोलती ते ।।५३५।।
याज्ञिक ते वेडे। फसोनियां गेले। आचरोनि भले। यज्ञयाग ।।५३६।।
[२] देवपिसे ते हि। लिंग-प्रतिमांनीं। सर्वथा भुलोनि। [३] नागवले ।।५३७।।
समाधीच्या छंदें। जाहले भ्रमिष्ट। होवोनि विरक्त। योगीजन ।।५३८।।
आपुलिया बळें। मिळवोनि भोग। भोगावे ते चांग। जगामाजीं ।।५३९।।
ह्याविण आणिक। नसे पुण्य साच। बोलती ऐसें च। आसुरी ते ।।५४०।।
नातरी आपण। दुर्बळ म्हणोन। न होती स्वाधीन। भोग-सुखें ।।५४१।।
मग तयांविण। तडफडे जीव। पाप सर्वथैव। नव्हे का तें ।।५४२।।
धनिकांचे प्राण। हिरोनियां घ्यावे। पाप हें मानावें। जरी साच ।।५४३।।
तरी हातीं येतां। तयांचें सकळ। सांगा पुण्य-फळ। नव्हे का तें ।।५४४।।
देखा दुर्बळातें। भक्षी बळवंत। बाधक तें होत। जरी साच ।।५४५।।
तरी थोर मासा। गिळी लहानातें। तयाचें का होतें। [४] निसंतान ? ।।५४६।।
आणि प्रजोत्पत्ति। व्हावी म्हणोनियां। भलीं शोधोनियां। कुळें दोन्ही ।।५४७।।
कुंडली पाहोन। जरी सुमुहूर्तीं। मेळविलीं जाती। वधूवरें ।।५४८।।
तरी देखा जे का। पशु-पक्ष्यादिक। प्रजा असंख्याक। असे ज्यांची ।।५४९।।
तयांचे विवाह। होती काय येथें। विधिविधानातें। पाहोनियां ।।५५०।।

---

१ अधिकार चालविणारा. २ देवाचें वेड लागलेले. ३ फसले गेले. ४ वंशाचा नाश; कुळक्षय.

चोरीचें तें धन। जरी हातीं आलें। तरी काय झालें। विष कोणा ? ।।५५१।।
केला व्यभिचार। आवडीनें कोणी। होय तो म्हणोनि। कुष्टी काय ? ।।५५२।।
म्हणोनियां एक। नियंता ईश्वर। भोगवी साचार। धर्माधर्म ।।५५३।।
आणि इहलोकीं। जें जें करी जीव। भोगितो तें सर्व। परलोकीं ।।५५४।।
ऐसें बोलती जें। [1] थोतांड तें सर्व। दिसे कोठें देव। परलोक ।।५५५।।
जातां कर्ता जीव। देहातें सोडून। मग उरे कोण। भोगाया तें ।।५५६।।
भोगीं देवेन्द्रातें। उर्वशीच्या संगें। जैसें सुख लाभे। स्वर्गलोकीं ।।५५७।।
तैसा कीटक हि। लोळतां नरकीं। मानीतसे सुखी। आपणातें ।।५५८।।
म्हणोनि जो स्वर्ग-। नरकाचा भोग। पापपुण्यभाग। नाहीं तेथें ।।५५९।।
तयां दोहीं ठायीं। प्राप्त होय साच। देखा कामाचा च। सुखभोग ।।५६०।।
म्हणोनियां जेथ। नर मादी दोन्ही। मिळती होवोनि। [2] कामवश ।।५६१।।
तेथ जन्म पावे। आघवें हें जग। लय पावे मग। कैसें ऐका ।।५६२।।
आपुला चि स्वार्थ। साधावा म्हणोन। जगाचें पोषण। करूं जातां ।।५६३।।
परस्परांमाजीं। माजोनि [3] विद्वेष। होतसे विनाश। सृष्टीचा ह्या ।।५६४।।
कामाविण मूळ। जगा दुजें नाहीं। बोलती हें पाहीं। आसुर ते ।।५६५।।
असो ऐसे हीन। शब्द उच्चारोन। द्यावा वायां शीण। वाचेसी कां ? ।।५६६।।

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ।।९।।

ऐसा तिटकारा। देवाचा अंतरीं। म्हणोनि ह्या परी। [4] जल्पती ते ।।५६७।।
हें तों नव्हे कांहीं। परी देव नाहीं। निश्चय हा पाहीं। तयांचा गा ।।५६८।।
काय सांगूं ऐसी। पाखांडाची खूण। ठेविती रोवून। अंतरीं ते ।।५६९।।
स्वर्ग-नरकाची। तयांचिया चित्तीं। कोठोनियां [5] क्षिती। उरे मग ।।५७०।।
अशुद्धोदकाचा। जणूं बुडबुडा। ऐसा जो हा खोडा। शरीराचा ।।५७१।।
तया खोड्यामाजीं। सांपडोनि भले। बुडोनियां गेले। भोग-पंकीं ।।५७२।।
विनाशाच्या वेळीं। बद्ध होय मासा। जाळ्यामाजीं जैसा। [6] धीवराच्या ।।५७३।।

---

१ खोटें; थापा. २ विषयाधीन. ३ वैर. ४ बडबडतात. ५ पर्वा. ६ मासे धरणाऱ्याच्या.

ना तरी देहाचा। येतां अंतकाळ। होतसे प्रबळ। रोग जैसा ॥५७४॥
जगाचें अनिष्ट। करावया पाहीं। नभीं जैसा येई। * धूमकेतु ॥५७५॥
तैसे आसुरी ते। पावती जन्मास। करावया नाश। जगताचा ॥५७६॥
जणूं अशुभाचे। अंकुर ते साचे। चालते पापाचे। कीर्तिस्तंभ ॥५७७॥
जें जें सांपडे तें। जाळण्यावांचोनि। जैसें नेणें अग्नि। दुजें कांहीं ॥५७८॥
करावें विश्वाचें। तैसें अकल्याण। स्वभाव हा जाण। आसुरांचा ॥५७९॥
तया कर्मीं कैसा। तयांचा आवेश। म्हणे हृषीकेश। ऐक पार्था ॥५८०॥

काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः।
मोहाद् गृहीत्वाऽसद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः ॥१०॥

जाळ्यामाजीं पाणी। राहे ना सांठोन। पुरे ना इंधन। अग्नीलागीं ॥५८१॥
ऐसे [१] बुभुक्षित। [२] दुर्भर जे कोणी। तयांचा [३] अग्रणी। काम जो का ॥५८२॥
तया कामासी ते। जीवीं बाळगोन। दंभ-अभिमान। मेळविती ॥५८३॥
[४] मत्त [४] कुंजरातें। पाजितां [५] वारुणी। मग तो झिंगोनि। नाचे जैसा ॥५८४॥
तैसी मदाची हि। धुंदी आगळी च। चढूं लागे साच। तयांअंगीं ॥५८५॥
तयांअंगीं जाण। वसे मूर्खपण। दुराग्रहा स्थान। तें चि एक ॥५८६॥
मग काय सांगूं। कैसी विपरीत। निश्चयाची रीत। असे त्यांची ॥५८७॥
जेणें परपीडा। घडे परघात। ऐशा कर्मीं रत। होवोनियां ॥५८८॥
गाजावें जगांत। आपुलें चि नांव। ऐसी एक हांव। बाळगिती ॥५८९॥
आपुला डांगोरा। सर्वत्र पिटोन। लेखिती ते हीन। त्रिलोकासी ॥५९०॥
धर्माचिया नांवें। सोडिली जी गाय। हवें तें तें खाय। मुक्तपणें ॥५९१॥
तैसे महादोषां। न घालितां बंध। वागती स्वच्छंद। आसुरी ते ॥५९२॥

चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥११॥

वाढवोनि ऐसा। दुष्कर्मांचा व्याप। वाहती अमाप। चिंताभार ॥५९३॥
काय सांगूं तया। चिंतेचें वर्णन। मानिती जीवन। तें हि थोडें! ॥५९४॥

---

१ भुकेलेले. २ भरण्यास किंवा तृप्त होण्यास कठिण. ३ मुख्य. ४ माजलेल्या हत्तीला. ५ दारू.
* परिशिष्ट पहा.

तया चिंतेपुढें। जें का त्रिभुवन। तें हि अणूहून। सान दिसे ॥५९५॥
पाताळापासोन। खोल ती गहन। असे नभाहून। अति उंच ॥५९६॥
यम-नियमांची। विवंचना जैसी। असे योगियासी। निरंतर ॥५९७॥
तैसी धनंजया। तयांचिया मनीं। चिंतेची टोंचणी। [१] अहर्निश ॥५९८॥
किंवा पतिलागीं। येतां हि मरण। जाय ना सोडोन। सती जैसी ॥५९९॥
तैसा चिंताभार। वाहती अपार। इच्छुनी असार। भोग-सुखें ॥६००॥
स्त्रियेचें गायन। ऐकावें श्रवणीं। पहावें नयनीं। स्त्रियेसी च ॥६०१॥
स्त्रियेसी च प्राण-। सर्वस्व मानोन। द्यावें अलिंगन। सर्वेन्द्रियीं ॥६०२॥
टाकावें अमृत। तें हि ओंवाळून। स्त्रीसुखावरून। सर्वथैव ॥६०३॥
स्त्रीसुखावांचून। दुजें नाहीं सुख। निश्चय हा देख। आसुरांचा ॥६०४॥
धांवती [२] तदर्थ। स्वर्गपाताळांत। दाहीदिशाप्रांत। ओलांडोनि ॥६०५॥

आशापाशशतैर्बद्धा: कामक्रोधपरायणा:।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥१२॥

[३] आमिषाचा घांस। गिळी जैसा मासा। मोहें [४] बळी आशा। बाळगोनि ॥६०६॥
विषयांच्या ठायीं। ठेवितां आसक्ति। तैसी होय स्थिति। आसुरांची ॥६०७॥
वांछिलें तें प्राप्त। न होतां हि साच। आशा कोरडी च। वाढविती ॥६०८॥
मग जणूं कोश-। कीटकांसमान। घेती ते कोंडोन। आपणांसी ॥६०९॥
वाढविली आशा। राहणें अपूर्ण। तो चि द्वेष जाण। धनंजया ॥६१०॥
कामक्रोधाविण। ऐशापरी कांहीं। तयां दुजा नाहीं। पुरुषार्थ ॥६११॥
दासालागीं जैसी। सदा स्वामीसेवा। नाहीं च विसांवा। क्षणभरी ॥६१२॥
तैसें कामक्रोधें। तयां केलें दास। तरी प्रीति-द्वेष। वाढविती ॥६१३॥
वाढविती आशा। वाढविती [५] तृष्णा। विषय-वासना। नानापरी ॥६१४॥
परी [६] अर्थाविण। कैसे नाना भोग। भोगावे ते चांग। म्हणोनियां ॥६१५॥
मना माने तैसें। जगासी लुटोन। मेळविती धन। अगणित ॥६१६॥
कोणा आडरानीं। मारिती गांठोन। कोणाचें हिरोन। घेती सर्व ॥६१७॥

---

१ रात्रंदिवस. २ त्यासाठी. ३ गळाला लावलेलें खाद्य. ४ बळकट. ५ हांव. ६ पैशाशिवाय.

कोणा एकालागीं। कराया अपाय। अघोरी उपाय। योजिती ते।।६१८।।
[1]फांसक्या [2]चिकाटे। पातीं भाले जाळीं। घेवोनि जवळी। श्वानादिक।।६१९।।
ऐशा रीती पूर्ण। सुसज्ज होवोन। रानांवनांतून। हिंडोनियां।।६२०।।
पारधी ते जैसे। साधिती शिकार। आपुलें उदर। भरावया।।६२१।।
तैसा तो हि कर्मे। आचरितो हीन। आसुर जो जन। धनंजया।।६२२।।
पर-प्राण-घातें। मेळवोनि धन। मग संतोषोन। काय बोले।।६२३।।

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।।१३।।

म्हणे नव्हे का मी। जाहलों कृतार्थ। लुटोनियां वित्त। बहुतांचें।।६२४।।
ऐसा धन्यतेचा। जों जों चढे गर्व। तों तों वाढे हांव। आणिक हि।।६२५।।
मग म्हणे आतां। आणिक हि धन। आणीन लुटोन। आणिकांचें।।६२६।।
जें जें मेळविलें। त्या चि भांडवलें। जिंकीन उरलें। चराचर।।६२७।।
ऐसा विश्वाचिया। धनाचा मी धनी। होईन निदानीं। एकला च।।६२८।।
मग वक्रदृष्टी। पाहेन मी ज्यासी। रसातळीं त्यासी। पोंचवीन।।६२९।।

असौ मया हत: शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी।।१४।।

आजवरी वैरी। मारिले ते थोडे। मारीन मी गाढे। आणिक हि।।६३०।।
मग जेथें तेथें। प्रभुपणें साच। जगीं एकला च। नांदेन मी।।६३१।।
झाले माझे दास। तयां वगळून। [3]करीन [3]चंदन। आणिकांचें।।६३२।।
काय सांगूं फार। चराचरीं थोर। ईश्वर साचार। मी च एक।।६३३।।
भोग-साम्राज्याचा। मी च एक राव। सर्व सुखा ठाव। मी च एक।।६३४।।
म्हणोनियां माझें। पाहतां ऐश्वर्य। तुच्छ नव्हे काय। इंद्र तो हि।।६३५।।
मनें वाचा देहें। करीन जें कांहीं। नेईन सर्व हि। सिद्धीस तें।।६३६।।
मज एकाविण। दुज्या कोणालागीं। असे ऐसी जगीं। आज्ञासिद्धी।।६३७।।
मज [4]महा-बळा। देखिलें ना साच। काळ तोंवरी च। बळवंत।।६३८।।

---

१ शिकारीसाठीं दोराचें फांस. २ चिकटा लावलेल्या काठ्या. ३ फडशा पाडीन. ४ बलिष्ठाला.

३५

जगामाजीं एक। मी च-सुख-राशि। [1] तुळेल माझ्याशीं। ऐसा कोण ॥६३९॥

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्तिसदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिता: ॥१५॥

वर्णिती कुबेर। संपन्न म्हणोन। परी तो निर्धन। मजपुढें ॥६४०॥
रमापतीची हि। संपत्ति थोडी च। धन माझें साच। पाहूं जातां ॥६४१॥
पाहूं जातां माझें। कुळ जात गोत। उणा [2] शुचित्वांत। ब्रह्मा तो हि ॥६४२॥
मिरविती वायां। ईश्वरादि नांवें। माझी [3] सरी पावे। ऐसें कोण ॥६४३॥
आतां लोपलें जें। जारण-मारण। तयाचा करीन। जीर्णोद्धार ॥६४४॥
मग आणिकांचा। काढावया कांटा। यज्ञाची प्रतिष्ठा। आरंभीन ॥६४५॥
माझीं स्तुतिस्तोत्रें। गातील जे कोणी। मातें रंजवोनि। नटनाचें ॥६४६॥
मागतील तें तें। तयांतें देवोन। दाता मी म्हणोन। मिरवीन ॥६४७॥
मना माने तैसें। करीन भोजन। [4] आकंठ सेवीन। मद्य-मांस ॥६४८॥
कामिनींच्या गळां। घालोनियां मिठी। धन्य त्रिजगतीं। होईन मी ॥६४९॥
असो किती ऐसें। करावें वर्णन। वायां गेले जाण। आसुर ते ॥६५०॥
जणूं ख-पुष्पांचा। हुंगावा सुगंध। तैसा चि हा छंद। आसुरांचा ॥६५१॥

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृता:।
प्रसक्ता: कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥१६॥

हवें तें तें जैसें। बडबडे रोगी। [5] कोपे जेव्हां अंगीं। [6] सन्निपात ॥६५२॥
तैसे ते उन्मत्त। करिती वल्गना। रचोनियां नाना। मनोरथ ॥६५३॥
जाण अज्ञानाचे। जणूं धूलि-कण। होती ते म्हणोन। धनंजया ॥६५४॥
आशा वावटळ। तयां भोवंडीत। ऐसी गगनांत। संकल्पांच्या ॥६५५॥
जैसे अनावर। आषाढींचे मेघ। नातरी तरंग। सागराचे ॥६५६॥
तैशा अखंडित। कामना अनेक। आसुरी जे लोक। तयां लागीं ॥६५७॥
मग धनंजया। कांटेऱ्यावरून। काढावीं ओढून। पद्में जैसीं ॥६५८॥
तैसें त्या वासना-। वेलींच्या जाळ्यांनीं। जातसे फाटोनि। चित्त त्यांचें ॥६५९॥

---

१ तुलना होईल. २ पवित्रपणांत. ३ बरोबरी. ४ पोटभर. ५ चढतो. ६ दोषी ताप.

ना तरी पाषाणीं। हापटतां घडा। तयाचा चुराडा। होय जैसा॥६६०॥
तैसें चुरडोन। जाय त्यांचें चित्त। वासनांनीं भ्रांत। होय जेव्हां॥६६१॥
तेव्हां जैशा रीती। वाढतां चि रात्र। अंधार सर्वत्र। भरूं लागे॥६६२॥
तैसा तयांचिया। अंतरीं अपार। मोहाचा विस्तार। होऊं लागे॥६६३॥
वाढतां चि मोह। वाढती विषय। विषयीं आश्रय। पातकांसी॥६६४॥
बळावतां पापें। नरकींची व्यथा। जितेपणीं पार्था। पावती ते॥६६५॥
म्हणोनि दुर्मती। आसुर जे होती। घडे तयां वस्ती। नरकीं च॥६६६॥
जेथें अति तीक्ष्ण। जणूं खड्ग-पातीं। ऐसीं पानें येती। वृक्षालागीं॥६६७॥
तापल्या तेलाचे। [1]उतती सागर। पेटती डोंगर। निखाऱ्यांचे॥६६८॥
यातनांचा नाच। तो च यम-जाच। होय जेथें साच। नित्य नवा॥६६९॥
ऐशा महा-घोर। रौरवीं साचार। पडती सत्वर। आसुर ते॥६७०॥
ऐसा नरकाचा। [2]शेलका च वांटा। घेवोनि सर्वथा। जन्मले जे॥६७१॥
ते हि धनंजया। भुलोनियां वायां। यज्ञयाग क्रिया। आचरती॥६७२॥
सर्व तो देखावा। नाटकी म्हणोन। विफल ते जाण। यज्ञयाग॥६७३॥
[3]वारांगना साच। पाहें जैशा रीती। मानोनियां पति। [4]वल्लभातें॥६७४॥
[5]अहेव म्हणोनि। लोकीं मिरवती। तैसी च ती कृति। आसुरांची॥६७५॥

आत्मसंभाविता: स्तब्धा धनमानमदान्विता:।
यजन्ते नाम यज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्॥१७॥

आपणा आपण। मानोनि महंत। फुगती अद्भुत। गर्वें तेणें॥६७६॥
लोखंडाचे खांब। जैसे सदा ताठ। तैसे ते गर्विष्ठ। वांकती ना॥६७७॥
नातरी पर्वत। जैसे नभीं उंच। लीनता तैसे च। नेणती ते॥६७८॥
मग थोरपण। आपुलें आपण। मुखें वाखाणून। आनंदती॥६७९॥
तया आनंदाच्या। भरीं तृणाहून। लेखिती ते हीन। जगालागीं॥६८०॥
धनाचिया मद्यें। माजोनियां पाहीं। नेणती ते कांहीं। कार्याकार्य॥६८१॥
पार्था जयांपासीं। सामुग्री ही ऐसी। काय ते तयांसी। यज्ञयाग!॥६८२॥

---

१ ऊंतू जातात. २ अचूक; निवडक. ३ वेश्या. ४ यजमानाला; शेठला. ५ सौभाग्यवती.

परी काय नोहे। तयांच्या हातून। वेडे पिसे जन। जाहले जे ॥६८३॥
म्हणोनि ते मूर्ख। [1]बलोन्मादें मग। यज्ञाचें हि सोंग। आचरिती ॥६८४॥
कुंड ना मंडप। नको तयां वेदी। साधन-समृद्धि। यथायोग्य ॥६८५॥
विधि-विधानाशीं। सदा ज्यांचें वैर। ऐशा परी स्वैर। यज्ञ त्यांचे ॥६८६॥
देवा-ब्राह्मणांचें। नांव हि तें कानीं। न यावें म्हणोनि। इच्छिती जे ॥६८७॥
तेथें तयां देवां। पाचारितो कोण। यावें हो म्हणोन। यज्ञयागीं ॥६८८॥
मृत वासराचें। कातडें काढून। तयामाजीं तृण। भरोनियां ॥६८९॥
मग धेनूपुढें। वत्स तें ठेवोन। करिती [2]दोहन। युक्तिमंत ॥६९०॥
दाखवोनि तैसें। यज्ञाचें निमित्त। सर्व आप्त इष्ट। बोलावोनि ॥६९१॥
* आहेराच्या नांवें। आसुर ते जन। सर्वस्व हिरोन। घेती त्यांचें ॥६९२॥
साधावयालागीं। आपुला उत्कर्ष। इतरांचा नाश। इच्छूनियां ॥६९३॥
ऐशा परी जाण। करोनि यजन। जगा नागवून। टाकिती ते ॥६९४॥

अहंकार बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ॥१८॥

मग [3]भेरी-डंके। पुढें झडवोनि। [4]दीक्षित म्हणोनि। मिरविती ॥६९५॥
तयां अधमांतें। चढे अभिमान। व्यर्थ मोठेपण। येतां ऐसें ॥६९६॥
काजळें अंधार। काढावा लिंपोन। तैसें मूर्खपण। दृढ होय ॥६९७॥
भरे अंगीं ताठा। दुणावे अहंता। बळावे सर्वथा। अविचार ॥६९८॥
मग चढे त्यांच्या। बळासी हि बळ। आणिकां समूळ। उच्छेदाया ॥६९९॥
अहंकार आणि। सामर्थ्य हीं दोन्ही। एकत्र मिळोनि। येतां ऐसीं ॥७००॥
तेणें दर्पाचिया। सागरालागोन। अमर्यादपण। प्राप्त होय ॥७०१॥
कामाचें हि पित्त। खवळोनि जाय। दर्प जेव्हां होय। अमर्याद ॥७०२॥
लागतां चि मग। कामाची ती धग। भडकते आग। क्रोधाची हि ॥७०३॥
जैसें तुपाचें वा। तेलाचें कोठार। पेटावें प्रखर। ग्रीष्म-काळीं ॥७०४॥
तों चि तया भर। द्यावया साचार। भेटावा [5]अघोर। वारा तेथें ॥७०५॥

---

१ ताकदीच्या मस्तीनें. २ दूध काढणें. ३ ढोल-चौघडे; तासेवाजंत्री. ४ यज्ञकर्ते. ५ भयंकर.
* परिशिष्ट पहा.

तैसीं जयांठायीं। अहंकार बळ। [१] दर्पादि सकळ। वस्ती आलीं ॥७०६॥
तयां आसुरांची। हिंसावृत्ति स्वैर। कोणासी हि ठार। करूं धांवे ॥७०७॥
आपुलें चि रक्त-। मांस आटवोन। जारण-मारण। साधिती ते ॥७०८॥
ऐशा कर्मीं जो मी। अंतर्यामी देव। तयासी च घाव। लागती ते ॥७०९॥
* अभिचारादिक। कर्में आचरोन। टाकिती पिळोन। ज्या ज्या जीवां ॥७१०॥
तयां जीवांठायीं। जो मी [२] सच्चिद्घन। तया मज शीण। होय त्याचा ॥७११॥
जारण मारण। इत्यादिकांतून। गेले जे सुटून। जीव कोणी ॥७१२॥
तयांचिया वर्मीं। घालिती ते घाव। मनीं दुष्ट भाव। बाळगोनि ॥७१३॥
सती साधुसंत। उदार याज्ञिक। किंवा अलौकिक। तपोधन ॥७१४॥
एकनिष्ठ भक्त। संन्यासी महंत। आणि शुद्धचित्त। वेदवेत्ते ॥७१५॥
ऐसीं हीं जीं माझीं। विश्रांतीचीं स्थानें। शुद्धसत्वगुणें। चोखाळलीं ॥७१६॥
तयांवरी [३] द्वेष-। विष-लिप्त तीक्ष्ण। सोडिती ते बाण। कुशब्दांचे ॥७१७॥

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥१९॥

ऐशा रीती माझें। करावया वैर। सिद्ध झाले नर। आसुर जे ॥७१८॥
आपुलें कर्तव्य। जाती विसरोन। करोनि धारण। नर-देह ॥७१९॥
तयां पापियांतें। दंडितों मी कैसें। ऐक सांगतसें। धनंजया ॥७२०॥
नर-देहाची ती। हिरोनि पदवी। तयांलागीं ठेवीं। ऐशा रीती ॥७२१॥
भव-नगरीचा। पाणवठा साचा। यातना-ग्रामींचा। उकिरडा ॥७२२॥
ऐसी तमोयोनि। जी का धनंजया। ती च देईं तयां। मूढांलागीं ॥७२३॥
तृण हि मिळेना। खावयासी जेथें। महावनीं तेथें। ऐशा घोर ॥७२४॥
[४] व्याघ्र-वृश्चिकादि। योनीमाजीं हीन। घालितों मी जाण। तयांलागीं ॥७२५॥
मग क्षुधेनें ते। होतां कासावीस। बोकाणिती मांस। आपुलें चि ॥७२६॥
त्या चि योनीमाजीं। जन्मती फिरून। जातां ते मरून। ऐशा रीती ॥७२७॥
किंवा आपुल्या च। गरळाच्या दाहें। सदा जळताहे। अंग ज्यांचें ॥७२८॥

---

१ गर्व वगैरे. २ सच्चिदानंद आत्मा. ३ द्वेषरूपी विषाने माखलेले. ४ वाघ, विंचू वगैरे.
* परिशिष्ट पहा.

ऐसे तयां सर्प। ठेवितों करून। बिळांत कोंडून। राहती जे ।।७२९।।
घेतला तो श्वास। सोडाया बाहेर। जेवढा साचार। वेळ लागे ।।७३०।।
तेवढा हि तयां। दुर्जनांसी साच। विसांवा नाहीं च। धनंजया ।।७३१।।
ऐशापरी गेले। जरी कल्प कोटि। तरी नाहीं मुक्ति। क्लेशांतून ।।७३२।।
ह्यापरी अधम। योनीमाजीं जन्म। [1]पेणें हें प्रथम। तयांचें गा ।।७३३।।
मग ह्याहून हि। आणिक [2]दुर्गति। तुज सांगू किती। धनंजया ।।७३४।।

आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तय ततो यान्त्यधमां गतिम् ।।२०।।

ऐक पावती ते। कैसी अधोगति। जोडोनि संपत्ति। आसुरी ही ।।७३५।।
मिळे व्याघ्रादिक। तमोयोनीमाजीं। अल्प विश्रांती जी। देहाधारें ।।७३६।।
ती हि तयांची मी। घेतां हिरावून। तम चि होवोन। राहती ते ।।७३७।।
जयाचा किळस। वाटे पातकातें। अंधार हि जेथें। काळवंडे ।।७३८।।
शीणातें हि शीण। जयातें पाहोन। जाय शिसारून। नरक हि ।।७३९।।
महाभयाचा हि। होय थरकांप। जेणें योगें ताप। तो हि [3]पोळे ।।७४०।।
घाणीतें हि घाण। वाटे ऐसें स्थान। हीनाहून हीन। विश्वीं जें का ।।७४१।।
तें चि लाभे तयां। आसुरांतें देख। भोगोनि अनेक। [4]तमोयोनी ।।७४२।।
ऐसी सांगू जातां। आसुरांची कथा। वाचेसी सर्वथा। कष्ट होती ।।७४३।।
तयांचें स्मरण। करावया जाण। धजे ना हें मन। हटे मागें ।।७४४।।
हाय ! हाय ! मूर्ख। आसुर हे लोक। केवढे नरक। जोडिती गा ।।७४५।।
जेणें योगें ऐसा। घोर अध:पात। होतसे निभ्रांत। धनंजया ।।७४६।।
ती ही नेणों हीन। आसुरी संपत्ति। कां गा वाढविती। मतिमंद ! ।।७४७।।
परी अर्जुना तो। नको धरूं पंथ। आसुर हे जेथ। राहती गा ।।७४८।।
दंभादिक साही। दोष जयांठायीं। वस्ती आले पाहीं। संपूर्णत्वें ।।७४९।।
तया आसुरांची। संगति नको च। हवें का हें साच। सांगावया ।।७५०।।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मन:।

---

१ मुक्कामाची जागा. २ वाईट अवस्था. ३ भाजतो. ४ पशु, पक्षी, कीटकादि योनी.

काम: क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ।।२१।।

काम-क्रोध-लोभ। त्रिकुटाचें बंड। तेथें तों उदंड। पाप पिके।।७५१।।
सर्व दु:खांची हे। करविती भेट। दाखवोनि वाट। कोणासी हि ।।७५२।।
किंवा पातकांची। सभा च ही देख। दावाया नरक। पापियासी ।।७५३।।
नाहीं [1]त्रिकुटें ह्या। व्यापिलें [2] अंतर। तोंवरी च दूर। रौरव तो ।।७५४।।
पार्था तिघांची ह्या। घडतां संगति। अपायांची प्राप्ति। अनायासें ।।७५५।।
ह्या चि काम-क्रोध। लोभामुळें पाहीं। होतसे स्वस्ताई। यातनांची ।।७५६।।
वेगळी ती हानि। नसे ह्यांच्याहून। हानि च हे जाण। मूर्तिमंत ।।७५७।।
हीन नरकाचा। हा चि [3] दारवंठा। बहु सांगूं आतां। काय तुज ।।७५८।।
काम-क्रोध-लोभ। त्रिवर्गीं साचार। वागती जे स्वैर। जीवेंभावें ।।७५९।।
तयां आसुरांतें। नरकीं च जाण। लाभतो सन्मान। धनंजया ।।७६०।।
म्हणोनियां काम-। क्रोधादि दोषांची। [4]त्रिपुटी जी साची। दु:खदायी ।।७६१।।
त्याज्य ती सर्वथा । ऐसें तुज पार्था। किती सांगूं आतां। वारंवार ।।७६२।।

एतैर्विमुक्त: कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नर: ।
आचरत्यात्मन: श्रेयस्ततो याति परां गतिम् ।।२२।।

कामक्रोधादिक। दोष हे आघवे। सांडोनि रहावें। स्वस्थ जेव्हां ।।७६३।।
तेव्हां चि बोलावी। जोडायाची मात। चारी पुरुषार्थ। धर्मादिक ।।७६४।।
देखा काम-क्रोध-। लोभाचें त्रिकूट। अंतरीं जागृत। जोंवरी हें ।।७६५।।
तोंवरी कल्याण। नाहीं च निभ्रांत। ऐसें रमाकांत। तो हि म्हणे ।।७६६।।
आत्म-विनाशाची। जया वाटे भीति। आत्म्यावरी प्रीति। जयाची गा ।।७६७।।
तयें सांडोनि हे। लोभ काम क्रोध। असावें सावध। निरंतर ।।७६८।।
बाहुबळें पोटीं। बांधोनि पाषाण। समुद्र तरोन। जावें जैसें ।।७६९।।
नातरी जीवन। लाभावें म्हणोन। टाकावें पिवोन। कालकूट ।।७७०।।
काम-क्रोध-लोभ। त्रिकूट हें जाण। तैसें चि कारण। विनाशासी ।।७७१।।
म्हणोनियां पार्था। [5] निजान्तरांतून। ठाव चि पुसोन। टाकीं ह्याचा ।।७७२।।

---

१ तिघांच्या टोळक्यानें. २ मन; अंतकरण. ३ उंबरठा. ४ तिघांचा गट. ५ आपल्या अंत:करणांतून.

तीन कड्यांची ही। बेडी पायांतील। तुटोनि जाईल। एकाएकीं ॥७७३॥
तेव्हां चि येईल। चालावया सुखें। राजमार्ग देखें। स्वहिताचा ॥७७४॥
देहातें [१] त्रि-दोष। सांडोनियां जातां। आरोग्य सर्वथा। लाभे जैसें ॥७७५॥
किंवा जैसें चोर। चहाड [२] शिनळ। ह्यांविण निर्मळ। गांव नांदे ॥७७६॥
नातरी अंतरीं। मिळे समाधान। त्रि-ताप निघोन। जातां जैसें ॥७७७॥
तैसे कामादिक। लोपतां साचार। जीवासी अपार। सुख होय ॥७७८॥
मोक्षमार्गीं मग। सज्जनांचा संग। लाभतसे चांग। तयालागीं ॥७७९॥
ह्यापरी सत्संग। लाभतां प्रबळ। मिळतां चि बळ। सच्छास्त्रांचें ॥७८०॥
तेणें योगें जाय। ओलांडूनि साचीं। जन्म-मरणाचीं। माळरानें ॥७८१॥
मग गुरु-कृपा-। रूपी जें [३] पट्टण। सदा परिपूर्ण। आत्मानंदें ॥७८२॥
तया पट्टणीं तो। नित्य करी वास। श्रीगुरूचा दास। होवोनियां ॥७८३॥
तेथें सर्वांमाजीं। अत्यंत जी प्रिय। भेटे च ती माय। आत्मरूप ॥७८४॥
आत्मरूप माय। भेटतां तत्काळ। आटे हा जंजाळ। संसाराचा ॥७८५॥
ह्यापरी जो काम-। क्रोध-लोभांतून। मोकळा होवोन। राहे स्व-स्थ ॥७८६॥
तयासी च लाभे। एवढें गहन। आत्मप्राप्तिधन। धनंजया ॥७८७॥

य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारत:।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥२३॥

असो नावडोनि। ऐसी आत्मप्राप्ति। कामादिकीं प्रीति। ठेवी जो का ॥७८८॥
सर्वां हिताहित। दाविता जो दीप। समान [४] सकृप। जगामाजीं ॥७८९॥
तया मायबाप। वेदाचा साचार। सर्वथा धि:कार। करी जो का ॥७९०॥
विधिनिषेधाची। धरी ना जो भीड। जया नाहीं चाड। स्वहिताची ॥७९१॥
ऐसें माजवोनि। विषयांचें बंड। पुरवी जो लाड। इंद्रियांचे ॥७९२॥
काम-क्रोध-लोभां। मानोनि दैवत। पाळिली शपथ। मोडी ना जो ॥७९३॥
मग स्वैराचार। हें चि महावन। तेथें पदार्पण। करी जो का ॥७९४॥
तया आत्मचोरा। मुक्ततेची वार्ता। स्वप्नीं हि सर्वथा। ऐकूं ये ना ॥७९५॥

---

१ कफ, वात व पित्त यांचा अतिरेक. २ वाईट चालीचे; व्यभिचारी. ३ नगरी; शहर. ४ कृपाळु.

तया पर-लोकीं। सद्‌गति नाहीं च। हें तों असे साच। धनंजया ॥७९६॥
परी [1] ऐहिक हि। भोग तो तयास। सुखें भोगायास। सांपडे ना ॥७९७॥
कोळ्यांचिया जाती-। माजीं शिरूं पाहे। माशांचिया मोहें। ब्राह्मण जो ॥७९८॥
तयासी तेथें हि। [2] पाखंडी म्हणोन। दूर घालवोन। देती जैसें ॥७९९॥
तैसें विषयांतें। भुलोनि ऐहिक। जेणें परलोक। लाथाडिला ॥८००॥
तया ऐहिक हि। भोग तो कोठून। टाकितां गिळून। यमराजें ॥८०१॥
एवं परलोक। नाहीं तया स्वर्ग। ऐहिक जो भोग। तो हि नाहीं ॥८०२॥
मग मोक्षाचें तों। नांव हि तयास। नको घ्यावयास। धनंजया ॥८०३॥
कामाचिया बळें। म्हणोनि जो देख। भोगूं पाहे सुख। विषयांचें ॥८०४॥
तया भोग स्वर्ग। मिळे ना साचार। होय ना उद्धार। तयाचा गा ॥८०५॥

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥२४॥

इति श्रीमद्‌भगवद्‌गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसंपद्विभागयोगो नाम
षोडशोऽध्याय: ॥१६॥

म्हणोनियां वाटे। स्व-हित तें व्हावें। तरी [3] नोलांडावें वेदाज्ञेतें ॥८०६॥
स्वभावें ती साध्वी। साधी आत्महिता। पतीचिया व्रता। आदरोनि ॥८०७॥
नातरी पाळोन। श्रीगुरु-वचन। गांठी आत्मधन। शिष्य जैसा ॥८०८॥
असो निजठेवा। जरी हातीं यावा। तरी पुढें दिवा। करावा गा ॥८०९॥
तैसे जरी पार्था। चारी पुरुषार्थ। साधावे यथार्थ। ऐसें वाटे ॥८१०॥
तरी तेणें [4] श्रुति-। स्मृतींतें मानोन। करावें पालन। [5] तदाज्ञेचें ॥८११॥
शास्त्र जें सांगेल। सोडावें म्हणोनि। राज्य हि तें मानीं। तृणाऐसें ॥८१२॥
तेविं विषातें हि। मानूं नको वैरी। घ्यावें ऐसें जरी। म्हणे शास्त्र ॥८१३॥
ऐसा वेदीं होय। एकनिष्ठ भाव। तरी कोठें ठाव। अहितासी ॥८१४॥
अहितापासोन। करोनि रक्षण। देवोनि कल्याण। पोषिते जी ॥८१५॥

---

१ ह्या जगांतील. २ धर्महीन. ३ ओलांडून जाऊ नये. ४ वेद व शास्त्रे ह्यांना. ५ त्यांच्या आज्ञेचें.

ऐसी धनंजया। दुजी माता कोण। असे श्रुतीहून। जगालागीं ॥८१६॥
म्हणोनियां ऐसी। माय जी पांडवा। मेळविते जीवा। परब्रह्मीं ॥८१७॥
तिज अव्हेरोनि। न जावें कुणी हि। भजावी ती तूं हि। विशेषत्वें ॥८१८॥
स्वधर्माचरण। सर्वथा मानोन। बळ-संपादन। करोनियां ॥८१९॥
सत्य सत्य येथें। जन्मलासी पार्था। शास्त्रां सार्थकता। आणावया ॥८२०॥
[१] धर्मानुज ऐसें। नांव हें सहज। ओघें आलें तुज। धनंजया ॥८२१॥
म्हणोनि [२] त्वां येथें। विशेषेंकरोन। धर्मातें सांडोन। वर्तावें ना ॥८२२॥
आणि कार्याकार्य-। विवेकीं तूं जाण। शास्त्र तें प्रमाण। मानावें गा ॥८२३॥
अकार्य तें पार्था। सर्वथा वाईट। म्हणोनि तें येथ। नाचरावें ॥८२४॥
स्वयें सत्कार्याचा। करावा आचार। भावें पुरस्कार। करोनियां ॥८२५॥
आज तुझ्या हातीं। [३] विश्व-प्रामाण्याची। [४] मुद्रा असे साची। बुद्धिमंता ॥८२६॥
म्हणोनि त्रिवार। अर्जुना तूं होसी। लोकसंग्रहासी। पात्र जगीं ॥८२७॥
ह्यापरी आसुरी। दोषांचें लक्षण। देवें परिपूर्ण। विवरोनि ॥८२८॥
तयां दोषांतून। कैसें व्हावें मुक्त। तें हि सर्व येथ। सांगितलें ॥८२९॥
देवासी पुसेल। पार्थ धनुर्धर। आतां सद्विचार। अंतरींचा ॥८३०॥
तुम्हां संतजनां। ऐसी विनवणी। ऐकावा तो कानीं। चैतन्याच्या ॥८३१॥
धृतराष्ट्रालागीं। व्यासाज्ञेनुसार। संजयें साचार। सांगितलें ॥८३२॥
तैसें मी हि तुम्हां। संतांसी सांगेन। प्रसादेंकरोन। श्रीगुरूच्या ॥८३३॥
तुम्हां संतांचिया। कृपेचा वर्षाव। होईल सदैव। मजवरी ॥८३४॥
तरी संतोषून। डोलवाल मान। एवढा होईन। व्याख्याता मी ॥८३५॥
द्यावें अवधान-। रूपी कृपादान। गोड ही मानोन। सेवा माझी ॥८३६॥
होईन सनाथ। मग सर्वथैव। म्हणे ज्ञानदेव। निवृत्तीचा ॥८३७॥

इति श्रीस्वामी स्वरूपानंदविरचित श्रीमत् अभंग-ज्ञानेश्वरी

षोडशोऽध्यायः।

हरये नमः। हरये नमः। हरये नमः। श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

---

* परिशिष्ट पहा. १ धर्माच्या मागून जन्मलेला, धर्माचा भाऊ, धर्मशास्त्राचा पाठीराखा.
२ तूं. ३ लोकमान्यतेचा. ४ शिक्का.